ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

फाल्गुन २०७८ मार्च २०२२

राष्ट्रीय बाल गीत अंक

नन्हें नन्हें हाथ जोड़कर
नन्हा शीश नवाऊँगा।
नन्हा कंठ खोलकर उसको
नन्हें गीत सुनाऊँगा।
नन्हें पावों बढ़ जाऊँगा
दिल में भक्ति भाव भरकर
नन्हें हाथों पहनाऊँगा
'विजय मुकुट' माँ के सिर पर।
– पं. सोहनलाल द्विवेदी

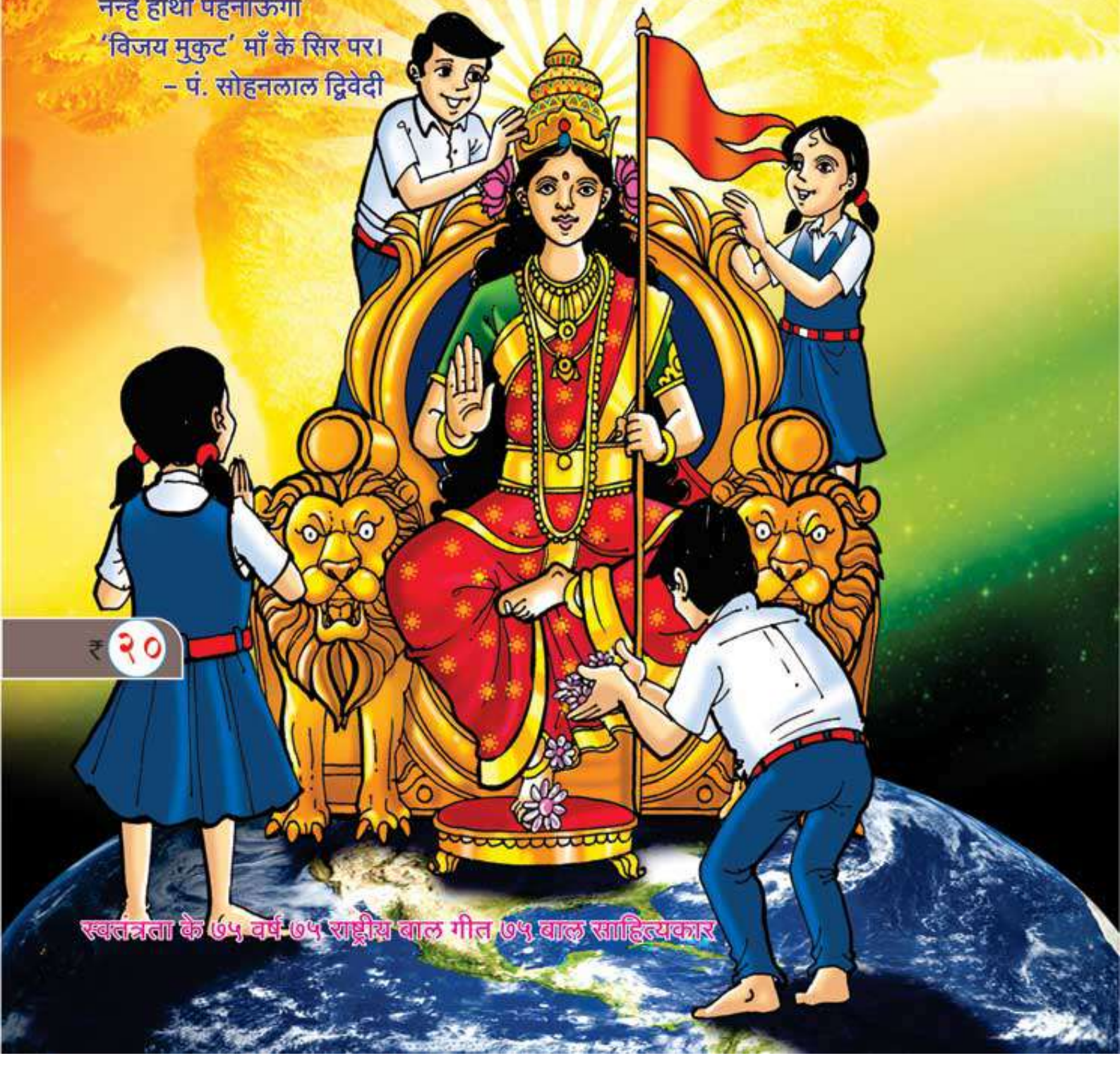

₹ २०

स्वतंत्रता के ७५ वर्ष ७५ राष्ट्रीय बाल गीत ७५ बाल साहित्यकार

वीणा वादिनी वर दे

– पं. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

वर दे वीणा वादिनी! वर दे।
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव,
भारत में भर दे।
काट अंध उर के बंधन स्तर
बहा जननि! ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर
जगभग जग कर दे।
नव गति नव लय ताल छंद नव
नवल कंठ, नव जलद मन्द्र रव
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे।

– प्रयाग (उ. प्र.)

वन्दना

– पं. सोहनलाल द्विवेदी

हे भगवान! दयानिधान!
मुझको दो इतना वरदान,
चाहे सुख हो चाहे दुख हो
रहे देश का हरदम ध्यान।

बाधाओं में, विपदाओं में
धीरज धरूँ, बनूँ बलवान।
तन मन वारूँ जीवन वारूँ
भारत पर होऊँ बलिदान।

– बिन्दकी (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन २०७८ ▪ वर्ष ४२
मार्च २०२२ ▪ अंक ९

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

यह हमारी स्वतंत्रता का अमृत वर्ष है। ७५ वाँ वर्ष और इस विशेष अंक में आपके लिए चुन–चुनकर प्रस्तुत किए जा रहे हैं ७५ रचनाकारों के ७५ राष्ट्रीय बाल गीत। अपने गौरवशाली विशेषांकों की परम्परा में यह अपने प्रकार का पहला विशेषांक होगा जिसे हमने केवल बाल गीतों पर केन्द्रित किया है। विषय राष्ट्रीयता इसलिए चुना कि स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव वर्ष में इस पावन प्रसंग पर आपके सामने स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रयत्नों से लगाकर स्वतंत्र भारत के इन ७५ वर्षों का एक भावचित्र आपके सामने आ सके। विधा गीत इसलिए कि बाल साहित्य ही नहीं बड़ों के साहित्य में भी मन में भाव जगाने, भक्ति जागरित करने में गीत सदा से सफलतम विधा रही है। अपनी सरसता, गेयता और भावपूर्णता के कारण गीत पढ़ने–सुनने के साथ ही मन की गहराइयों तक रमते चले जाते हैं।

अपनी इन विशेषताओं के कारण ही 'गीत' किसी को संस्कारित करने का भी सफल माध्यम है। किसी भी भाव या विचार से हार्दिक संबंध जोड़ने के लिए गीत बहुत प्रभावी होते हैं। बच्चों के जीवन में भी बालसाहित्य का परिचय बालसाहित्य की इसी विधा के माध्यम से होता है वह भी तब से, जब वह भाषा भी नहीं जानता है, न बोलना, न लिखना–पढ़ना। जी हाँ! शिशु को माँ लोरी सुनाती है तब गीत विधा का ही तो प्रयोग करती है।

इस अंक में हिन्दी बालसाहित्य के वरिष्ठतम गीतकारों की रचनाओं से लेकर वर्तमान रचनाकारों तक की रचनाएँ हैं, लगभग एक शताब्दी के राष्ट्रीय बाल गीत। कुछ रचनाएँ गीत नहीं है पर गेय हैं। राष्ट्रीय भाव धारा का यह प्रवाह स्वतंत्रता पूर्व से वर्तमान पड़ाव तक के विविध भावों को प्रकट करता है, कुछ गीत भावी भारत के लिए भी सुन्दर भाव जगाने वाले हैं। इन ७५ रचनाओं व रचयिताओं के अलावा भी बाल साहित्य में कई ऐसी प्रेरक रचनाएँ व रचनाकार हैं लेकिन अंक की अपनी सीमाएँ हैं। अत: उन सब रचनाकारों के प्रति ससम्मान प्रणाम एवं क्षमा याचना करता हूँ व आप बच्चों से आग्रह करता हूँ कि यथा संभव उन रचनाकारों की रचनाएँ भी खोजें, पढ़ें, गुनें। यह अंक आप सदैव सम्हालकर रखना चाहेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। अंक के प्रति अपनी राय मुझे पत्र लिखकर बताना न भूलिए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

राष्ट्रीय बालगीत

०१	वीणा वादिनी वर दे	-पं. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	०२
०२	वन्दना	-पं. सोहनलाल द्विवेदी	०२
०३	प्रभाती	-पं. भवानी प्रसाद मिश्र	०५
०४	नन्हे मुन्ने हम सब बच्चे	-विष्णु गुप्त 'विजिगीषु'	०६
०५	हम हैं देश	-शंकर सुल्तानपुरी	०७
०६	हम स्वतंत्र भारत के बच्चे	-नरेशचंद्र सक्सेना 'सैनिक'	०८
०७	राष्ट्र के सपनों में तुम ढलो	-प्रो. श्रीकृष्ण 'सरल'	०९
०८	जन्मभूमि	-पं. कामता प्रसाद 'गुरु'	१०
०९	भारत की संतान	-डॉ. चक्रधर 'नलिन'	११
१०	छोटे सेनानी	-भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'	१२
११	हम बच्चे	-रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक'	१३
१२	बढ़े कदम	-चंद्रपाल सिंह यादव 'मयंक'	१३
१३	जयगान	-डॉ. श्रीकृष्णचंद्र तिवारी 'राष्ट्रबंधु'	१४
१४	हम बच्चे भारत के वीर	-शंभूलाल शर्मा 'बसंत'	१४
१५	नया सवेरा लाएँगे	-डॉ. गणेशदत्त सारस्वत	१५
१६	विनती	-सूर्य कुमार पाण्डेय	१५
१७	भारत देश महान के	-द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी	१६
१८	भारत कितना प्यारा है	-गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'	१६
१९	हम वीर बनें	-स.मो. अवधिया 'स्वर्ण सहोदर'	१७
२०	आह्वान	-बालकवि बैरागी	१८
२१	जय जय भारत देश	-कृष्ण दत्त भारद्वाज	१८
२२	स्वर्ग यहाँ सरसाएगा	-डॉ. श्रीकांत	१९
२३	सबसे न्यारा देश	-ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'	१९
२४	वह देश कौन-सा है ?	-पं. रामनरेश त्रिपाठी	२०
२५	अपना हिन्दुस्थान है	-अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'	२१
२६	हमको भारत प्यारा	-सोमदत्त त्रिपाठी	२२
२७	अपना हिन्दुस्थान	-रामगोपाल 'राही'	२३
२८	तिरंगा	-पद्मा चौगाँवकर	२३
२९	झण्डा गीत	-श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'	२४
३०	विश्वम्भर भारत	-राम	२४
३१	जय जय भारतमाता	-रामस्वरूप दुबे	२५
३२	सुन्दर है भारत की धरती	-डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ	२५
३३	अमर रहे यह देश	-रघुवीरशरण 'मित्र'	२६
३४	स्वतंत्रता का उत्सव	-सूर्यप्रकाश मिश्र	२६
३५	प्यारा भारतवर्ष हमारा	-राधेश्याम आर्य	२७
३६	हिन्द के बहादुरो !	-रामावतार त्यागी	२७
३७	बाल सैनिक	-रमापति शुक्ल	२८
३८	धर्म हमारा है	-भगवती प्रसाद द्विवेदी	२९
३९	सीमा रक्षा	-रामसिंहासन सहाय 'मधुर'	२९
४०	अपना देश महान	-बालकृष्ण गर्ग	३०
४१	भारत है मेरा घर	-निरंकार देव 'सेवक'	३०
४२	मिट्टी के बेटे	-मदनमोहन व्यास	३१
४३	साहसी सैनिक	-रामभरोसे गुप्त 'राकेश'	३१
४४	गौरवगान	-डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'	३२
४५	भारत माँ के रखवारे	-शिव अवतार 'सरस'	३२
४६	हमारा देश महान	-रामकुमार गुप्त	३३
४७	बालक हिन्दुस्थान के	-अवधकिशोर सक्सेना	३३
४८	बच्चों ने ठाना है	-गोपाल माहेश्वरी	३४
४९	तिरंगा दिलवा दो माँ !	-प्रभुदयाल श्रीवास्तव	३५
५०	फूलों की मुस्कान	-पूरन सरमा	३५
५१	हमारा देश	-अश्वनी कुमार पाठक	३६
५२	अपना यह तन मन	-राजनारायण चौधरी	३६
५३	बढ़ते हुए कदम	-कृष्ण 'शलभ'	३७
५४	शीश झुकाते हैं	-सांवलाराम नामा	३७
५५	एकता के नाम	-बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'	३८
५६	देवपुत्र	-गोविन्द भारद्वाज	३८
५७	बढ़ते जाएँगे	-डॉ. विनोदचंद्र पाण्डेय 'विनोद'	३९
५८	हम हैं पहरेदार	-शिवचरण चौहान	३९
५९	देश यह प्यारा है	-आचार्य भगवत् दुबे	४०
६०	भारत देश हमारा	-जगदीश गुप्त	४०
६१	आओ बच्चो गाओ बच्चो	-रुद्रपाल गुप्त 'सरस'	४१
६२	प्यारा हिन्दुस्थान	-नरेश मालवीय	४२
६३	भारत देश	-डॉ. शकुंतला कालरा	४२
६४	कुछ कर दिखलाएँ	-श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'	४३
६५	धन्य जन्मभूमि	-डॉ. राकेश 'चक्र'	४३
६६	फिर खुशियाँ बरसाऊँ	-सुकीर्ति भटनागर	४४
६७	तिरंगा फहराऊँगा	-पवन पहाड़िया	४४
६८	सुन्दर देश बनाएँगे	-इन्दु पाराशर	४५
६९	उन्नत होगा देश	-मृगेन्द्र श्रीवास्तव	४६
७०	बाल हैं गोपाल हैं	-नंदलाल जोशी	४७
७१	वीर सिपाही	-डॉ. परशुराम शुक्ल	४८
७२	बलिदानी वीरों की गाथा	-हरीश दुबे	४९
७३	अमृत महोत्सव	-राजा चौरसिया	४९
७४	तुम हो विश्व गुरु	-डॉ. अनुपमा गुप्ता	५०
७५	मातृ वंदना	-डॉ. रवीन्द्र शुक्ल	५१

देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करते समय ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ। विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** **चालू खाता (Current Account)** **IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए।

प्रभाती

– पं. भवानी प्रसाद मिश्र

उठो आँख खोलो कि पौ फट गई है।
युगों की अँधेरी निशा कट गई है।।

नया प्राण लेकर हवा आ रही है।
नया गान लेकर सदा आ रही है।।
कली खिल गई है नया रूप लेकर।
नया रंग भरकर किरन छा रही है।।

कमल के दलों की खुशी कुछ न पूछो।
उदासी की छाया अभी हट गई है।।

नई बात पग में नई बात मग में।
नए प्राण भीतर नए खून रग में।।
अपूरब उजाला दिशाओं में फैला।
पूरब ने हलचल मचाई है जग में।।

अँधेरा हटाते हुए हम चलेंगे।
अँधेरे की ताकत बहुत घट गई है।।

– टिगरिया (म. प्र.)

नन्हें-मुन्ने हम सब बच्चे

– विष्णु गुप्त 'विजिगीषु'

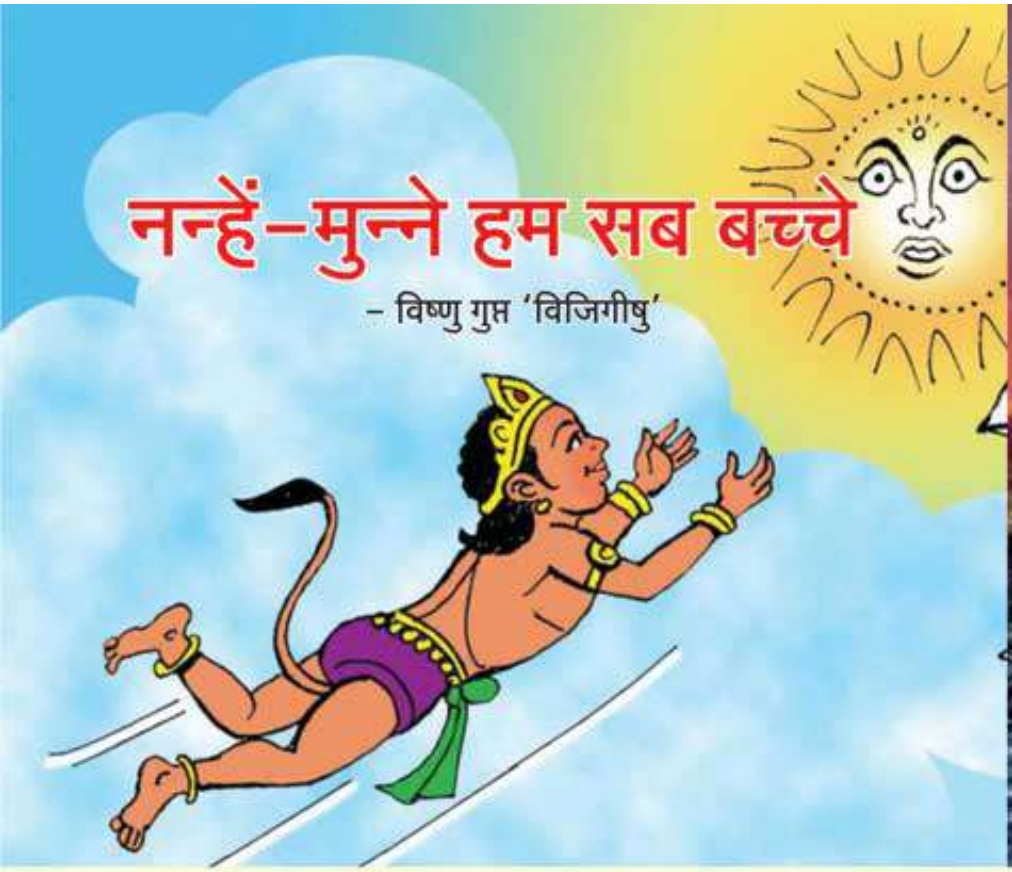

नन्हें-मुन्ने हम सब बच्चे, भारत की संतान हैं।
हम भविष्य हैं प्रिय स्वदेश के, हम ही हिन्दुस्थान हैं।।
कोई भी नादान न समझे, शेरों के संग खेले हैं।
हाथ डालकर मुँह में उनके, गिनते दाँत अकेले हैं।।
पवन पुत्र हम हनूमान हैं, लवकुश जैसे वीर हैं।
सौ योजन तक मार गिराएँ, हम राघव के तीर हैं।।
हम भारत के सिंह शूर हैं, रघुनंदन श्रीराम हैं।।
छोटे होने से क्या होता, सूरज मुख में धरते हैं।
नन्द दुलारे बन अँगुलि पर, गोवर्द्धन भी रखते हैं।।
नाग नाथ कर सिर पर उसके, पग रख नाचा करते हैं।
सिंहासन से खींच धरा पर कंस पछारा करते हैं।।
हम ही मोहन-चक्र सुदर्शन वंशीधर घनश्याम हैं।।
होनहार भारत के बेटे वीर बाँकुरे प्यारे हैं।
राणा की संतान सभी हम, वीर शिवा से न्यारे हैं।।
वीर हकीकत, गोरा-बादल, गोबिन्द की संतान हैं।
देशधर्म पर हँस-हँस कर हम हो जाते बलिदान हैं।।
हम बिस्मिल आजाद भगतसिंह वीर सुभाष महान हैं।।

– जलालाबाद (उ. प्र.)

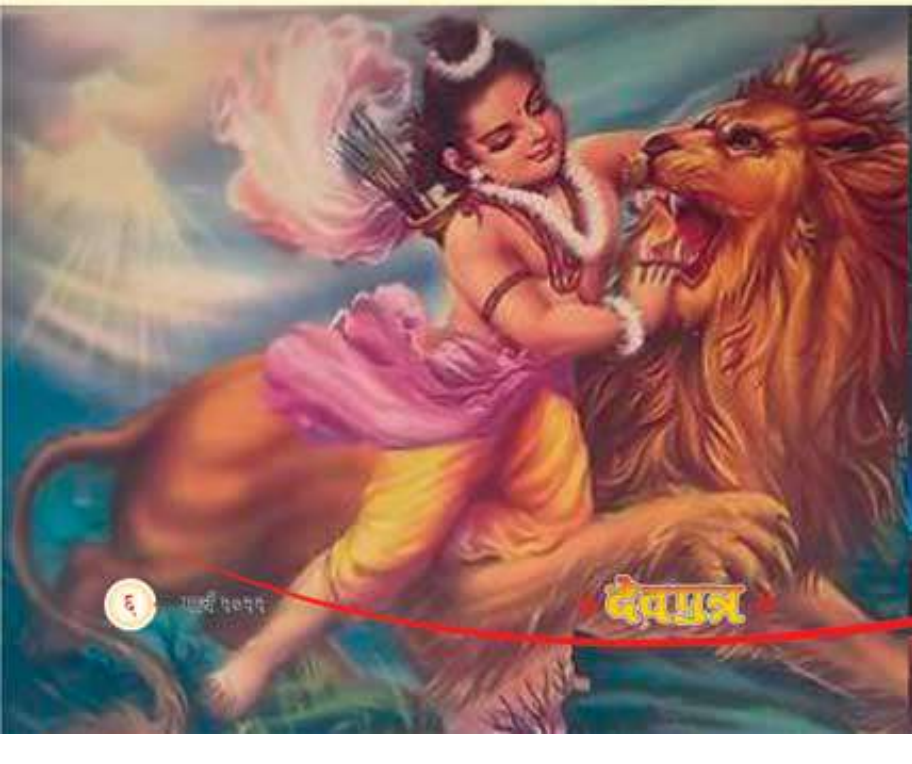

हम हैं देश

– शंकर सुल्तानपुरी

हम हैं देश हमारा देश।
हम बढ़ते तो बढ़ता देश।।

हम हैं भारत की तकदीर।
बदल रहे हैं हम तसवीर।
निर्धन दुर्बल कहे न कोई,
हम धनवान वीर बलशाली।
शस्य श्यामला भारत माता,
है फलदायक डाली–डाली।।
धर्मज्ञान की पावन गंगा
सत्यप्रेम की बहती धार।
झगड़ा नहीं जात मजहब का,
हमको है स्वदेश से प्यार।
प्रेम एकता का संदेश।
हम हैं देश हमारा देश।।

आन बान है, गर्व न हमको,
स्वाभिमान पर मर मिटते हैं।
हम पौरुष, साहस के पुतले,
दुश्मन कब सम्मुख टिकते हैं।
शोषण अत्याचार दमन से
हमने कभी न मानी हार।
कभी झुके हम ? गिरे उठे हम
हुए नहीं कुंठित लाचार।
हम प्रतीक वीर भारत के
अभिमन्यु लव कुश के वंशज।
राम कृष्ण के पावन पग की
माथे पर अंकित अब तक रज।
युग युग का यह गौरव शेष।
हम हैं देश हमारा देश।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

हम स्वतंत्र भारत के बच्चे

– नरेशचन्द्र सक्सेना 'सैनिक'

हम स्वतंत्र भारत के बच्चे, धीर वीर माँ की संतान।
हम सब मिल निर्माण करेंगे, अपना प्यारा हिन्दुस्थान।।

अपने श्रम से हम भर देंगे, घर–घर में फिर खुशहाली।
सदा खेत लहराते होंगे, भरे गोद में हरियाली।
शस्यश्यामला धरती माँ का, मिला सदा हमको वरदान।।

भारत है वह देश कि जिसने गीत शांति का गाया है।
अगर जरूरत पड़ी क्रांति की बढ़कर बिगुल बजाया है।
शीश भले कट जाए अपना, सह न सकेंगें हम अपमान।।

हममें है वह शक्ति शत्रु को, सीमा पार भगा देंगे।
जाग रहे आतंकवाद को गहरी नींद सुला देंगे।
अब न बहेंगे रक्त सुजन के और न अब होंगे बलिदान।।

हम रखवारे पंचशील के पग–पग पर पहरा देंगे।
मुक्त गगन में अपना झण्डा बढ़कर हम लहरा देंगे।
अखिल विश्व में गूँज उठेगा भारत का फिर से जय गान।।

– मैनपुरी (उ. प्र.)

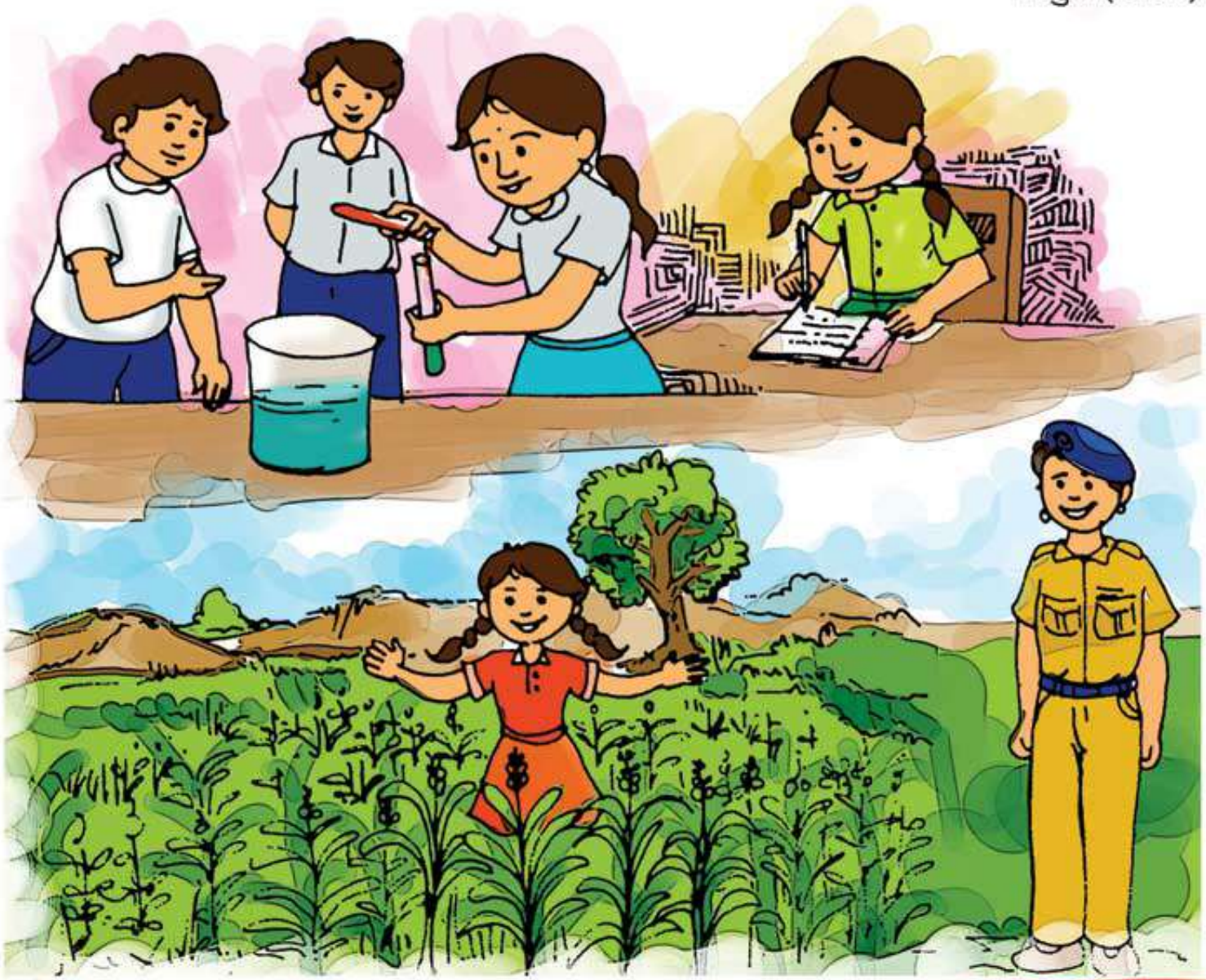

राष्ट्र के सपनों में तुम ढलो

– प्रा. श्रीकृष्ण 'सरल'

राष्ट्र के सपनों में तुम ढलो।
चीरकर अँधकार को चलो।।

तुम्हारी बाँहों में हो शक्ति।
धर्म हो देश धरा की भक्ति।
भावना से ऊँचा कर्त्तव्य,
कर्म में रहे सदा अनुरक्ति।
राष्ट्र के तुम हो मंगलगान,
राष्ट्र के स्वर में फूलो–फलो।।

राष्ट्र की उन्नति की हो चाह।
रहे अविरल उमंग उत्साह।
न तुमको पर्वत पाए रोक,
बना लो तुम सागर में राह।
राष्ट्र के तुम हो जीवन दान,
राष्ट्र के काँटों को तुम दलो।।

निराशा के तम का कर नाश
करो जीवन का पुण्य प्रकाश।
तुम्हारी धरती हो सम्पन्न,
तुम्हारा विस्तृत हो आकाश।
राष्ट्र के तुम हो भाग्य–विधान,
राष्ट्रहित तुम मशाल से जलो।।

तुम्हारी साँसों में हो आग।
तुम्हारे चिंतन में अनुराग।
तुम्हारे जीवन का आदर्श,
सदा हो औरों के हित त्याग।
सभी को दो सौरभ का दान,
फूल जैसे काँटों में पलो।।

– अशोक नगर (म. प्र.)

जन्मभूमि

– पं. कामता प्रसाद गुरु

जहाँ जन्म देता हमें है विधाता।
उसी ठौर में चित्त है मोद पाता।।
जहाँ है हमारे पिता बन्धु माता।
उसी भूमि से है हमें सत्य नाता।।

जहाँ की मिली वायु है जीवदानी।
जहाँ का भिदा देह में अन्न पानी।।
भरी जीभ में है जहाँ की सुबानी।
वही जन्म की भूमि है भूमि–रानी।।

कहीं जा बसे चाहता किन्तु जी है।
रहे सामने जन्म की जो मही है।।
नहीं मूर्ति प्यारी कभी भूलती है।
छटा लोचनों में सदा झूलती है।।

जिसे जन्म की भूमि भाती नहीं है।
जिसे देश की याद आती नहीं है।।
कृतघ्नी महा कौन ऐसा मिलेगा ?
जिसे देख जी क्या किसी का खिलेगा ?

जिसे जन्म की भूमि का मान होगा।
उन्हें भाइयों का सदा ध्यान होगा।।
दशा भाइयों की जिन्होंने न जानी।
कहेगा उसे कौन देशाभिमानी ?

– सागर (म. प्र.)

भारत की संतान

– डॉ. चक्रधर 'नलिन'

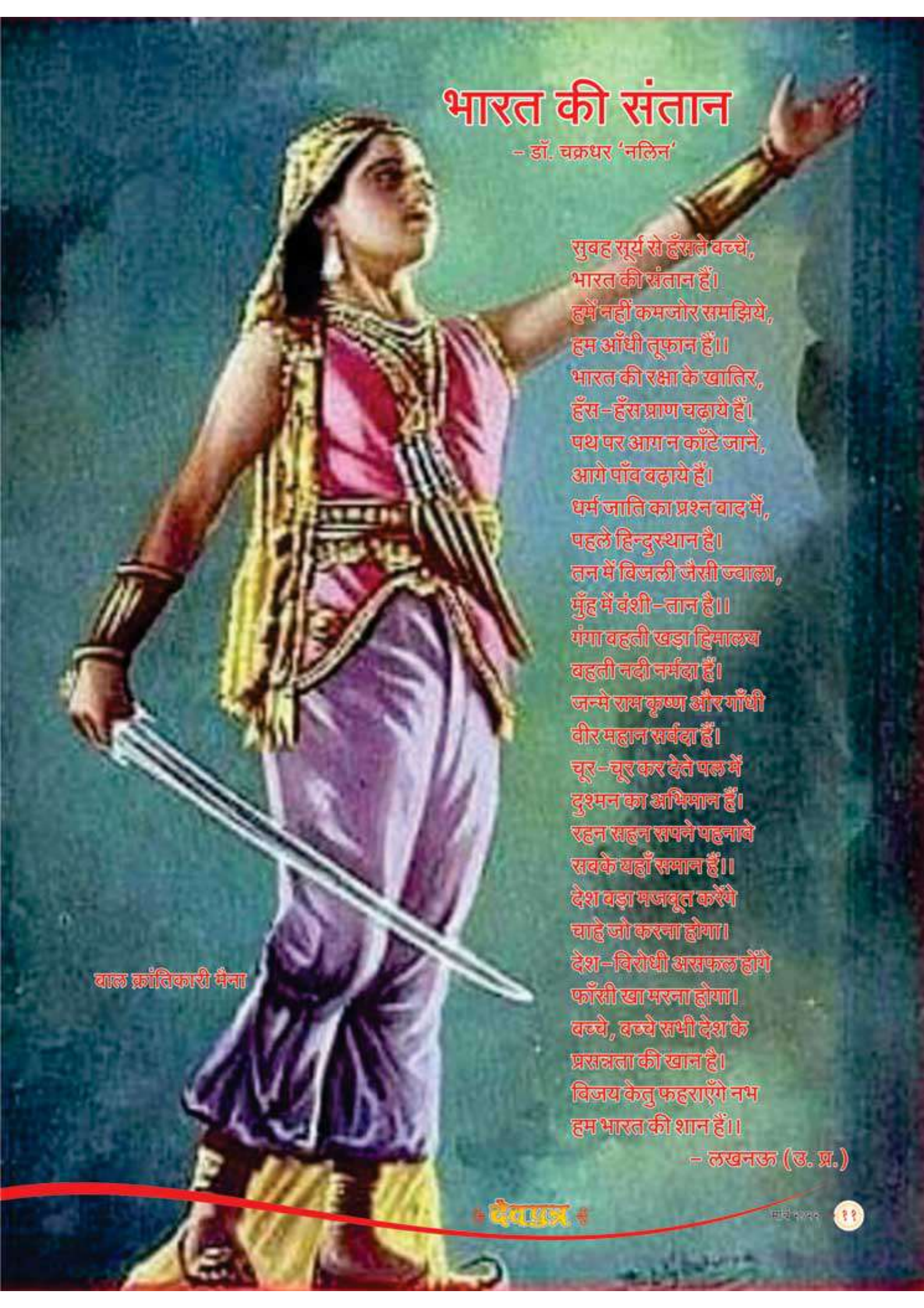

बाल क्रांतिकारी मैना

सुबह सूर्य से हँसते बच्चे,
भारत की संतान हैं।
हमें नहीं कमजोर समझिये,
हम आँधी तूफान हैं।।
भारत की रक्षा के खातिर,
हँस-हँस प्राण चढ़ाये हैं।
पथ पर आग न काँटे जाने,
आगे पाँव बढ़ाये हैं।
धर्म जाति का प्रश्न बाद में,
पहले हिन्दुस्थान है।
तन में बिजली जैसी ज्वाला,
मुँह में वंशी-तान है।।
गंगा बहती खड़ा हिमालय
बहती नदी नर्मदा हैं।
जन्मे राम कृष्ण और गाँधी
वीर महान सर्वदा हैं।
चूर-चूर कर देते पल में
दुश्मन का अभिमान हैं।
रहन सहन सपने पहनावे
सबके यहाँ समान हैं।।
देश बड़ा मजबूत करेंगे
चाहे जो करना होगा।
देश-विरोधी असफल होंगे
फाँसी खा मरना होगा।
बच्चे, बच्चे सभी देश के
प्रसन्नता की खान है।
विजय केतु फहराएँगे नभ
हम भारत की शान हैं।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

छोटे सेनानी

– भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

गाएँगे हम गाएँगे, गीत देश के गाएँगे।
भारत माँ की सेना में, आगे कदम बढ़ाएँगे।

हमको बच्चा मत समझो, हम छोटे सेनानी हैं।
स्वाभिमान से भरे हुए, किन्तु नहीं अभिमानी हैं।
मातृभूमि की रक्षा में, हम भी अलख जगाएँगे।।
गाएँगे हम गाएँगे गीत देश के गाएँगे।।

जो भी सम्मुख आएगा आँखें हमें दिखाएगा।
चाहे जो हो वह अपनी करनी का फल पाएगा।
साहस बल से दुश्मन को पल में धूल चटाएँगे।।
गाएँगे हम गाएँगे गीत देश के गाएँगे।।

हम सब वीर निराले हैं हम धुन के मतवाले हैं।
सदा देश की रक्षा का प्रण मन में हम पाले हैं।
चाहे आए काल स्वयं, हम न कभी भय खाएँगे।।
गाएँगे हम गाएँगे गीत देश के गाएँगे।।

हम करते हैं गान सदा भारत माँ के वीरों का।
हम करते सम्मान सदा देशभक्त रणधीरों का।
मानवतामय मानव को हम सब गले लगाएँगे।।
गाएँगे हम गाएँगे गीत देश के गाएँगे।।

– उन्नाव (उ. प्र.)

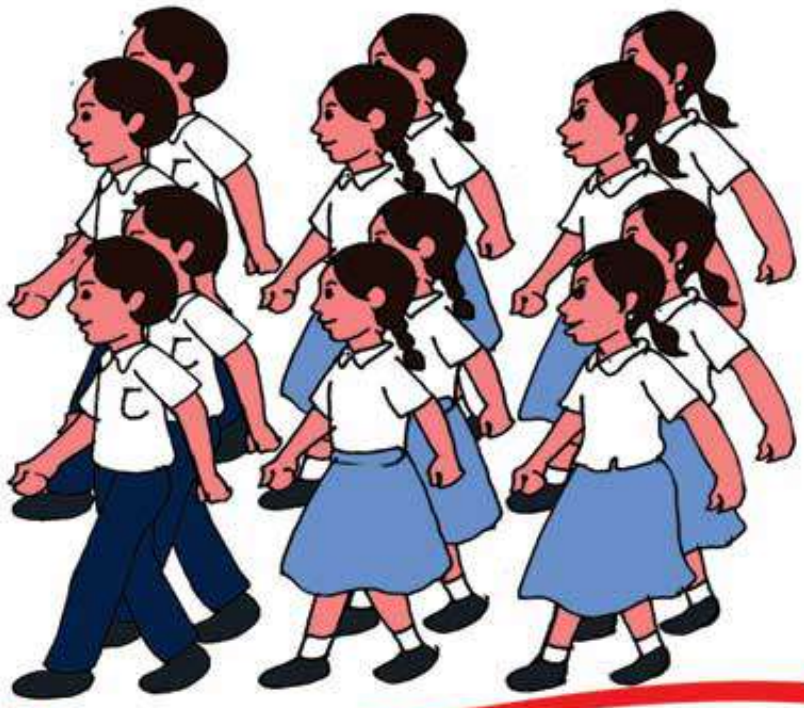

श्री. गुरुगोविंद सिंह जी एवं चारों साहबजादे

हम बच्चे

– रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक'

हम बच्चे हैं भारत माँ के,
इसका मान बढ़ाएँगे।
कठिन परिश्रम करके हम सब,
स्वर्ग धरा पर लाएँगे।।
छोटा होने से क्या होता ध्रुव की याद कहानी है।
उसका अनुयायी बनने की हमने मन में ठानी है।
चाहे जो बाधाएँ आएँ,
आगे बढ़ते जाएँगे।।
प्रभु से प्रीति हमारे मन में, है प्रह्लाद सरीखी पावन।
गुरुपुत्रों सी राष्ट्रभक्ति है, लवकुश सदृश ओजमय आनन।
सेवा करके मात–पिता की,
श्रवण कुमार कहाएँगे।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

बढ़े कदम

– चन्द्रपाल सिंह 'मयंक'

बढ़े कदम रुकें न हम,
बढ़े कदम रुकें न हम।
हम मतवाले हिम्मत वाले, भारत माता के रखवाले।
सीधे सादे भोले भाले, लेकिन आफत के परकाले।
नहीं किसी से जौ भर कम।
बढ़े कदम रुकें न हम।।
नहीं किसी पर हमला करते, लेकिन नहीं किसी से डरते।
दुश्मन से हम बढ़कर लड़ते, हरदम हम पाला सर करते।
चाहे सम्मुख आवे यम।
बढ़े कदम रुकें न हम।।
जो हमला करने को आवे, मजा मौत का उन्हें चखावें।
यों हम प्रेम भाव फैलावें, मुक्त कंठ से मिलकर गावें।
विश्वशांति का ही सरगम।
बढ़े कदम रुकें न हम।।

– कानपुर (उ. प्र.)

जय गान

– डॉ. श्रीकृष्णचन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबन्धु'

हमारा प्यारा हिन्दुस्तान। हमारा अपना हिन्दुस्तान।
हमारी आन। हमारी शान।
जान से प्यारा हिन्दुस्तान। खुशी से गाएँगे जय गान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
हुआ आजाद। हुआ आबाद।
शहीदों का महान वरदान। नया है न्यारा हिन्दुस्तान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
सभी हैं एक। रखेंगे टेक।
करेंगे तन मन धन बलिदान। रखेंगे आजादी का मान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।

– कानपुर (उ. प्र.)

हम बच्चे भारत के वीर

– शंभूलाल शर्मा 'बसंत'

बरसें गोले चाहे शोलें
या फिर जमकर बरसे ओलें
जितने भी आएँ संकट के
पर्वत को हम देंगे चीर।
हम बच्चे भारत के वीर।।

रुकना झुकना, अवसर चुकना
और न आता हमको थकना
नहीं डिगेंगे किसी हाल में
दुर्गम पथ हो या गंभीर।
हम बच्चे भारत के वीर।।

हँसते गाते बिगुल बजाते
दुश्मन दल पर कहर ढहाते
इसीलिए तो हम सब बच्चे
कहलाते बलशाली वीर।
हम बच्चे भारत के वीर।।

– करमागढ़ (छ. ग.)

नया सवेरा लाएँगे

– डॉ. गणेशदत्त सारस्वत

नन्हें नन्हें सैनिक हैं हम, लड़ने रण में जाएँगे।
हममें ताकत खूब भरी है। धीरज की संग सोन परी है।
गर्जन सुनकर हम सिंहों का दुनिया रहती डरी–डरी है।।
कल के स्वप्न सुनहले हैं हम।
नया सवेरा लाएँगे। लड़ने रण में जाएँगे।।
शेरों की दाढ़ों को गिनते। देख सकें कब अपना छिनते।
हाथ बढ़ा यदि दुश्मन का तो तोड़ दिए हम सबने मिलके।
प्रिय स्वदेश के रखवाले हम।
अपना धर्म निभाएँगे। लड़ने रण में जाएँगे।।
हम हिन्दी हैं जग की आशा। सभी सुखी हों है अभिलाषा।
भाषाएँ तो सभी हमें प्रिय किन्तु परमप्रिय हिन्दी भाषा।
आज नहीं तो कल ध्वज इसका
अम्बर में लहराएँगे। लड़ने रण में जाएँगे।।

– सीतापुर (उ. प्र.)

विनती

– सूर्यकुमार पाण्डेय

इतनी विनती है भगवान। देश हमारा बने महान।
कलकल छलछल जल हो निर्मल,
साफ हवा हो शीतल–शीतल।
इस धरती पर हो खुशहाली।
फूल खिले हों डाली–डाली।
भरे अन्न से घर–खलिहान। देश हमारा बने महान।
हो हम सब में भाई चारा
चमचम चमके देश हमारा।
हो न कहीं भी हिंसा दंगा
लहर–लहर लहराए तिरंगा।
हो निरोग सारे इंसान। देश हमारा बने महान।

– लखनऊ (उ. प्र.)

भारत देश महान के

– द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

हम हैं वीर बहादुर बच्चे, भारत देश महान के।
हम निर्भय होकर रहते हैं, चलते सीना तान के।।

अभी उमर के कच्चे हैं पर शेरों के बच्चे हैं।
डरते रहते हाथी जैसे हमसे अच्छे–अच्छे हैं।
बड़े निराले हैं हम अपनी, आन बान के शान के।।

गोली की बौछारों से हथियारों की मारों से।
हम न कभी डरने वाले हैं तेग तीन तलवारों से।
हमने झेले खूब थपेड़े आँधी के तूफान के।।

जो आगे बढ़ आएगा, हम पर हाथ उठाएगा।
हाथ उठाने से पहले ही अपने मुँह की खाएगा।
ललकारे हिम्मत हो उसमें किन्तु हमें पहचान के।।

– आगरा (उ. प्र.)

भारत कितना प्यारा है

– गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'

यहीं हिमालय–सा पहाड़ है, यहीं गंग की धारा है।
जमुना लहराती है सुन्दर, भारत कितना प्यारा है।।

फल फूलों से भरी भूमि है, खेतों में हरियाली है।
आमों की डाली पर बैठी, गाती कोयल काली है।

बच्चो! माँ ने पाल पोसकर, तुमको बड़ा बनाया है।
लेकिन यह मत भूलो तुमने, अन्न कहाँ का खाया है?

तुमने पानी पिया कहाँ का, खेले मिट्टी में किसकी?
पले हवा में किसकी बोलो, बच्चो! प्यारे भारत की।

– जौनपुर (उ. प्र.)

हम वीर बनें

– सभामोहन अवधिया 'स्वर्णसहोदर'

हम वीर बनें, सरदार बनें।
हम साहस के अवतार बनें।

तैरें निज उठी उमंगों पर,
सागर की तीव्र तरंगों पर,
अपने दम पर, अपने बल पर,
चाहें तो चढ़ें हिमालय पर।
हम खुद अपने आधार बनें।
उन्नति के जिम्मेदार बनें।।

कठिनाई से रण ठना रहे,
आफत का कुहरा घना रहे,
पर सदा हौंसला बना रहे,
सीना आगे को तना रहे।
हम प्रण के पालनहार बनें।
अपनी धुन के रखवार बनें।।

निज जन्मभूमि का क्लेश हरें,
जैसे हो सुखी स्वदेश करें,
जननी पर नित बलिहार रहें,
मर मिटने को तैयार रहें।
हम माँ के राजकुमार बनें।
जननी के उर के हार बनें।।

– शाहपुर (म. प्र.)

आह्वान

– बालकवि बैरागी

आशीषों का आँचल भरकर प्यारे बच्चों लाई हूँ।
युग जननी में भारतमाता द्वार तुम्हारे आई हूँ।।
तुम ही मेरे भावी रक्षक तुम ही मेरी आशा हो।
तुम ही मेरे भाग्य विधाता तुम ही प्राण पिपासा हो।।
मर्यादा का त्याग शील का पाठ मिला रघुराई से।
कर्म भक्ति का पाठ मिला है तुमको कृष्ण कन्हाई से।।
भीष्म पितामह ने सिखलाया किसे प्रतिज्ञा कहते हैं।
धर्मराज की सीख धर्महित कैसे संकट सहते हैं।।
चन्द्रगुप्त की तड़प भरी तलवार मिली है थाती में।
सांगा की सांसें चलती हैं वीर तुम्हारी छाती में।।
चेतक वाले महाराणा ने मरना तुमको सिखलाया।
वीर शिवा ने लोहा लेकर जीवन का पथ दिखलाया।।
पौरुष की प्रतिमा कहलाती रानी लक्ष्मीबाई हैं।
दयानंद ने स्वाभिमान की गरिमा तुम्हें लुटाई है।।
बापू ने आजादी लाकर दी है नन्हें हाथों में।
नेहरू चाचा ने ढाला है तुम सबको इस्पातों में।।
लालबहादुर ने सिखलाई हथियारों की परिभाषा।
छिपी नहीं है बेटों तुमसे मेरे मन की अभिलाषा।।
मुझे वचन दो करो प्रतिज्ञा मेरा मान बढ़ाओगे।
जनम जनम तक मेरे बेटे बनकर सुख पहुँचाओगे।।

– मनारसा (म. प्र.)

जय जय भारत देश

– कृष्णदत्त भारद्वाज, दिल्ली

जय जय भारत देश
नहीं विदेशी अब कोई भी तुमको देगा क्लेश।
हम सब मिलकर यत्न करेंगे लगे न तुमको ठेस।
सागर तेरे चरण धो रहा हिमगिरि तेरे केश।
फल–फूलों से सजा हुआ है तेरा सुन्दर वेष।
जीतेंगे रिपुओं को जब तक रक्तबिन्दु है शेष।

स्वर्ग यहाँ सरसाएगा

– डॉ. श्रीकांत

स्वतंत्रता का अमृत उत्सव भारतवर्ष मनाएगा।
ढोल बजाकर स्वतंत्रता का अर्थ सही समझाएगा।।
मातपिता गुरु आज्ञापालन अनुशासन का भी व्यवहार।
समय–शील कर्त्तव्य भावना सदा बड़ों से शिष्टाचार।
त्याग और बलिदान समर्पण परंपरा यह भारत की।
औरों के हित जीने में ही मर्यादा इसके रथ की।।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय पाएगा।।
अब न पढ़ेंगे गजनी गौरी बाबर का झूठा इतिहास।
साम्यवादियों गोरों का फिर ढह जाएगा हर विश्वास।
चन्द्रगुप्त चाणक्य चतुर्दिक खारवेल विजयी उल्लास।
पुष्यमित्र पश्चात कभी भी यूनानी फटके नहीं पास।।
इनके साथ शिवा महाराणा जय इतिहास पढ़ाएगा।।
शिक्षा हो स्वाधीन हमारी गणित और विज्ञान प्रबल।
हटे विदेशी गौरव झूठे, विकृतियाँ अपमान अनल।
संबोधन मम्मी पापा अंकल का उच्चार न हो।
बच्चे न कोई घर अब जिसमें संस्कृति का संस्कार न हो।।
आसन, प्राणायाम, साधना, भजन, ध्यान सिखलाएगा।।
नूडल, पिज्जा, बर्गर सब ये खाद्य कहाँ से आए हैं?
रोटी पूरी और परांठे खिचड़ी सब धकियाएँ हैं।
यहाँ विदेशी फास्टफूड से बच्चे तक बर्बाद हुए।
लूट खसोट मचा भारत, यूरोप चीन आबाद हुए।।
किन्तु बढ़ेगा भारत फिर भी स्वर्ग यहाँ सरसाएगा।।

– जयपुर (राजस्थान)

सबसे न्यारा देश

– ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'

प्यारा भारत वर्ष हमारा, दुनिया में है सबसे न्यारा।
ऊँचे पर्वत से है भारी, रहते सुन्दर झरने जारी।
बाग बगीचे नदिया नाले, सबका मन बहलाने वाले।
मुग्ध हुआ इस पर जग सारा, प्यारा भारत वर्ष हमारा।।
हुए यहीं हैं कितने दानी, वीर बहादुर औ बलिदानी।
हम सब शिक्षा लेते प्रतिदिन, सुनकर जिनकी कथा कहानी।
जग में यश अपना विस्तारा, प्यारा भारत वर्ष हमारा।।
सब सुख इससे हम हैं पाते, प्रतिदिन इसका ही गुणगाते।
बड़े प्रेम से विनती करके हम सब इसको शीश नवाते।
है सबकी आँखों का तारा, प्यारा भारत वर्ष हमारा।।

– सिंहगढ़ (उ. प्र.)

वह देश कौन-सा है?

– पं. रामनरेश त्रिपाठी

मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है, सुख स्वर्ग-सा जहाँ है वह देश कौन-सा है?
जिसका चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है, जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौन-सा है?
नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही है, सींचा हुआ सलोना वह देश कौन-सा है?
जिसके बड़े रसीले फल, कंद, नाज, मेवे, सब अंग में सजे हैं वह देश कौन-सा है?

जिसमें सुगंध वाले सुन्दर प्रसून प्यारे, दिन राज हँस रहें हैं वह देश कौन-सा है?
मैदान गिरिवनों में हरियालियाँ लहकती, आनंदमय जहाँ है वह देश कौन-सा है?
जिसकी अनंत धन से धरती भरी पड़ी है, संसार का शिरोमणि वह देश कौन-सा है?
सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी, जगदीश का दुलारा वह देश कौन-सा है?
पृथ्वी निवासियों को जिसने प्रथम जगाया, शिक्षित किया सुधारा वह देश कौन-सा है?

जिसमें हुए अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी, गौतम कपिल पतंजलि वह देश कौन-सा है?
छोड़ा स्वराज तृणवत आदेश से पिता के, वह राम थे जहाँ पर वह देश कौन-सा है?
निस्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहाँ थे, लक्ष्मण, भरत सरीखे वह देश कौन-सा है?

देवी पतिव्रता श्री सीता जहाँ हुई थीं, माता-पिता जगत का वह देश कौन-सा है?
आदर्श नर जहाँ पर थे बाल ब्रह्मचारी, हनुमान, भीष्म, शंकर, वह देश कौन-सा है?
विद्वान वीर योगी गुरु राजनीतिकों के, श्रीकृष्ण थे जहाँ पर वह देश कौन-सा है?
विजयी बली जहाँ के बेजोड़ सूरमा थे, गुरु भीष्म, द्रोण, अर्जुन, वह देश कौन-सा है?
जिसमें दधीचि दानी, हरिचन्द, कर्ण से थे, सब लोक का हितैषी वह देश कौन-सा है?

वाल्मीकि, व्यास ऐसे जिसमें महान कवि थे, श्री कालिदास वाला वह देश कौन-सा है?
निष्पक्ष न्यायकारी जन जो पढ़े-लिखे हैं, वे सब बता सकेंगे वह देश कौन-सा है?
* हैं कोटि-कोटि भाई सेवक सपूत जिसके, भारत सिवाय दूजा वह देश कौन-सा है?

– कोइरीपुर (उ. प्र.)

(* मूल कविता रचना के समय देश की जन संख्या ३६ करोड़ थी। अत: यहाँ ३६ कोटि शब्द प्रयोग हुआ था। लेकिन अब देश की जनसंख्या कई करोड़ है। अत: यह परिवर्तन समुचित मानकर किया गया है।)

अपना हिन्दुस्थान है

– अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

आग उगलता सूर्य कहीं पर और कहीं शीतल रातें।
कहीं है सर्दी, कहीं है गर्मी, कहीं है रिमझिम बरसातें।
कहीं है गेहूँ, कहीं है मक्का, कहीं धान ही धान है।
कहीं नारियल मीठे–मीठे कहीं चाय बागान हैं।
कहीं सेव से लदे वृक्ष हैं, कहीं घनी अमराई है।
कहीं गगन को छूते पर्वत, कहीं भयानक खाई है।
कहीं हैं उपवन जंगल झरने, कहीं खुला मैदान है।
कहीं है कल कल बहती नदियाँ, कहीं पे रेगिस्तान हैं।

कहीं दिवाली दुर्गापूजा, कहीं है पोंगल या ओणम।
कहीं है कत्थक, कहीं कथकली, गरबा या भरत नाट्यम्।
तरह–तरह की भाषा बोली, खानपान परिधान हैं।
लेकिन दिल से एक सभी भारत माँ की संतान हैं।।
दयाधर्म की शांति प्रेम की रीति सिखाई है हमने।
साक्षी है इतिहास विश्व को राह दिखाई है हमने।
दसों दिशाओं में युग–युग से गूँज रहा जयगान है।
सचमुच सारे जग से अच्छा अपना हिन्दुस्थान है।

– लखनऊ (उ. प्र.)

हमको भारत प्यारा

– सोमदत्त त्रिपाठी

राजा हरिश्चन्द्र

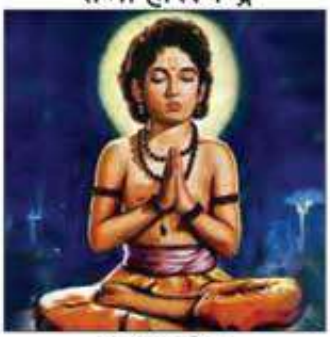
बालक ध्रुव

महर्षि वाल्मीकि

संत तुकाराम

महाकवि कंबन

ऋषि–मुनि, राजा–प्रजा सभी ने इस पर जीवन वारा।
प्राणों से भी बढ़कर हमको है यह भारत प्यारा।।

सत्यव्रती नृप हरिश्चंद्र से औ' दधीचि से दानी।
व्यास, वसिष्ठ, कणाद, कपिल से हुए तत्व विज्ञानी।
जन्में इस पर भरत प्रतापी शारद ने गुण गाया।
और यहीं प्रह्लाद भक्त ने पवि से प्रभु प्रकटाया।
अचल साधना करके इस पर ध्रुव ने ध्रुवपद धारा।
प्राणों से भी बढ़कर हमको, है यह भारत प्यारा।।

परशुराम, वाल्मीकि, पतंजलि, विश्वामित्र मनीषी।
हुए यहीं है राम लक्षमन और सती सीता–सी।
यहीं कृष्ण ने समर भूमि में कही कर्म की गीता।
पाण्डु सुतों ने यहीं असत् के परे धर्म–रण जीता।
राणा वीर प्रताप, शिवा ने इस पर सब कुछ वारा।
प्राणों से भी बढ़कर हमको है यह भारत प्यारा।।

बन्दा, वीर हकीकत, शंकर, तुलसी, सूर, कबीरा।
वल्लभ, श्री समर्थ, ज्ञानेश्वर, तुकाराम और मीरा।
भगतसिंह आजाद यहीं, केशव से राष्ट्र पुजारी।
हुए विवेकानंद, कम्ब कवि, दयानंद व्रत धारी।
जिएँ देशहित मरें देशहित है ध्रुव ध्येय हमारा।
प्राणों से भी बढ़कर हमको है यह भारत प्यारा।

– भोपाल (म. प्र.)

महर्षि दधीचि

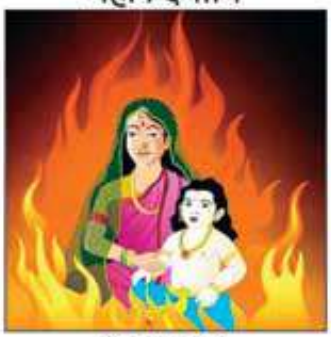
भक्त प्रह्लाद

महर्षि वेदव्यास

भक्तिमति मीराबाई

डॉ. केशवराव हेडगेवार

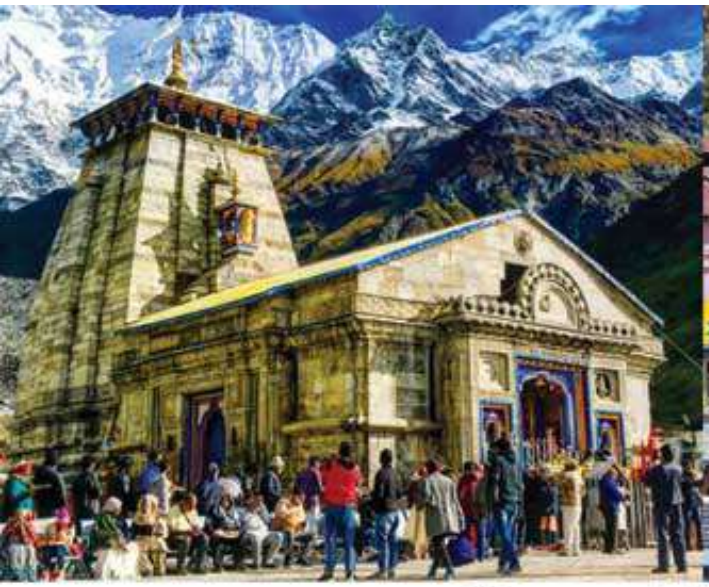

अपना हिन्दुस्थान

कहाँ हिमालय अपने जैसा, तीर्थ और देवालय हैं।
कण–कण में भगवान हमारे मंदिर और शिवालय हैं।।
कहाँ है पावन गंगा जग में नदियों में सरताज यहाँ।
बड़ी नदी हो कोई जगत में मगर मोक्षदा नदी यहाँ।।
तीर्थ अनेकों धरती पावन यहाँ ईश अवतार हुए।
ऋषि–मुनि राजा संत अनेकों त्यागी औ' दातार हुए।।
ज्ञान ध्यान विज्ञान सभी से अपना गहरा नाता है।
वीर प्रसविनी धरा खनिज वन देती भारत माता है।।
सौहार्द्री जन शांति चेतना धर्म अहिंसा प्यारा है।
मानवता से बड़ा न कोई यह आदर्श हमारा है।।
नैतिकता ही माप दण्ड है सत्य अहिंसा भावों का।
श्रम कर्त्तव्य और समरसता शांति स्नेह लगावों का।।
कोई कुछ भी कहे वस्तुत: अपना देश महान है।
अति उजियारा जग में प्यारा अपना हिन्दुस्थान है।।

– रामगोपाल 'राही' लाखेरी (राजस्थान)

तिरंगा

– पद्मा चौगाँवकर

लाल दुर्ग प्राचीर पे फहरे,
भारत का अभिमान तिरंगा।
बलिदानों की साक्ष्य बना है,
स्वतंत्रता की आन तिरंगा।
सैनिक दल मैं प्राण फूंकता,
वीरों का सम्मान तिरंगा।
संस्कृति के रंगों में रंगा,
भारत माँ की शान तिरंगा।
अन्तरिक्ष में पहुँच फहरकर,
बना विश्व पहचान तिरंगा।

– गंजबासौदा (म. प्र.)

झण्डा गीत

– श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।।
सदा शक्ति बरसाने वाला।
प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरषाने वाला।
मातृभूमि का तन मन सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

स्वतंत्रता के भीषण रण में।
लख कर जोश बढ़े क्षण क्षण में।
काँपे शत्रु देखकर मन में।
मिट जावे भय संकट सारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
इस झण्डे के नीचे निर्भय।
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय।
स्वतंत्रता है ध्येय हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
इसकी शान न जाने पाए।
चाहे जान भले ही जाए।
विश्व विजय करके दिखलाएँ।
तब हो वे प्रण पूर्व हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

– कानपुर (उ. प्र.)

विश्वम्भर भारत

– 'राम'

अमित महिम, हिम गिरि का मुकुट माथ, सागर पखारता, चरण लहराता है।
हास काशमीर, हीर हार नदियों की धार, पंचनद रव पाञ्चजन्य से सुहाता है।
नव वन माला से, अलंकृत विशाल वक्ष, गौरव गदा लिए, विन्ध्य गिरि भाता है।
चक्र चित्रभानु, शक्र मस्तक झुकाता सदा, भारत अनूप, विष्णुरूप छबि पाता है।

शारद प्रदेश मुख, अवध बिहार उर, दायाँ हाथ सिंध, बंग बायाँ हाथ प्यारा है।
गंगा गोमती ने, गंडकी ने, गोतमी ने, जिसे निज जलधार, हार देकर संवारा है।
मध्यम प्रदेश नाभि, देश है सुहाता कटि, किंकणी समान नर्मदा की अंबुधारा है।
आन्ध्र औ' द्रविड़, महाराष्ट्र है चरण, विश्व वंदित अखंड यही, भारत हमारा है।

धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष, का निधान तू है, चारधाम सप्तपुरियों का, तू सहारा है।
तू ही मातृभूमि, पितृभूमि और तीर्थ भूमि, तूने कितनों को यहाँ, तारा है उबारा है।
तू है धर्मक्षेत्र, तू ही कर्मक्षेत्र भी है तेरे, अंक में अजन्मा प्रभु ने भी जन्मधारा है।
वंदनीय देश! नन्दनंदन का रूप मान, तेरे चरणों में अभिनन्दन हमारा है।

– अज्ञात

जय जय भारत माता

हिम का सुंदर मुकुट पहन कर, फूलों के गहने धारण कर,
कश्मीरी शोभा से सजकर, तेरा नया रूप झलकाता।
जय जय भारत माता।।
गंगा यमुना का शीतल जल, कितना पावन कितना निर्मल,
निशिदिन बहता रहता कल-कल, हमको अमृत-सा सुख दाता।
जय जय भारत माता।।
फल मीठे मेवा भी हितकर, अन्न दूध को खाकर पीकर,
तेरी बड़ी गोद में पलकर, जन जन है अनुपम सुख पाता।
जय जय भारत माता।।
सागर तेरे पग पखारता, नारायण नर रूप धारता,
बिगड़ी बातों को सुधारता, तुझसे जनम-जनम का नाता।
जय जय भारत माता।।

– रामस्वरूप दुबे, अमेढ़ा (उ. प्र.)

सुन्दर है भारत की धरती

– डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

सुन्दर है भारत की धरती, सुन्दर इसकी हरियाली।
रंग-बिरंगे फूल खिले हैं, अँचल है शोभाशाली।।
लिए गोद में मुस्काती है, शिशु बसन्त को ले बाला।
वसन संवारा पत्रपुष्प का, क्यारी की पहनी माला।
बहती शीतल मंद पवन है सुख सुगंधि लाने वाली।।
वन्य कुसुम में हास भरा लख नभ में कोई मुसकाया।
भौरों की अठखेली ने जब गुनगुन कर गाना गाया।
तितली की सुकुमार बालिका रंग भरे पंखों वाली।।
स्वच्छ खेत बैलों की जोड़ी कृषक लिए मन फूल रहा।
रंग-बिरंगी भाव कल्पना में उसका मन झूल रहा।
गा-गा कर लो खेत काटती बासन्ती चूनर वाली।।
ऐसे कितने मधु के निर्झर धरती के उर से छूटे।
कटुता सब बह गई हलाहल के भारी मटके फूटे।
स्वतंत्रता की फैली नभ में स्वर्णकिरण मिश्रित लाली।।

– नोएडा (उ. प्र.)

अमर रहे यह देश

– रघुवीरशरण 'मित्र'
मेरठ (उ. प्र.)

अमर रहे यह देश हमारा अमर रहे।।
चलो देश का मान बढ़ाते बढ़े चलें।
अंधकार में दीप जलाते बढ़े चलें।
हम श्रम से मिट्टी को सोना कर देंगे,
हम फूलों से बाग देश के भर देंगे।
प्यारा–प्यारा देश हमारा अमर रहे,
अमर रहे यह देश हमारा अमर रहे।।

हम सूरज बनकर घर–घर में धूप भरें
हम झरनों की तरह देश में हँसा करें
पेड़ों से हम सीख चुके छाया देना
पर्वत से हमको आता पानी लेना
बढ़ने वाला कदम हमारा अमर रहे
अमर रहे यह देश हमारा अमर रहे।।

हम फूलों के लिए पेड़ बन आए हैं,
हम पेड़ों के लिए नीर भर लाए हैं।
हम धरती पर नई चाल से बढ़े चलें,
हम औरों के लिए सूर्य से अधिक जलें।
अपने बल का हमें सहारा अमर रहे,
अमर रहे यह देश हमारा अमर रहे।।

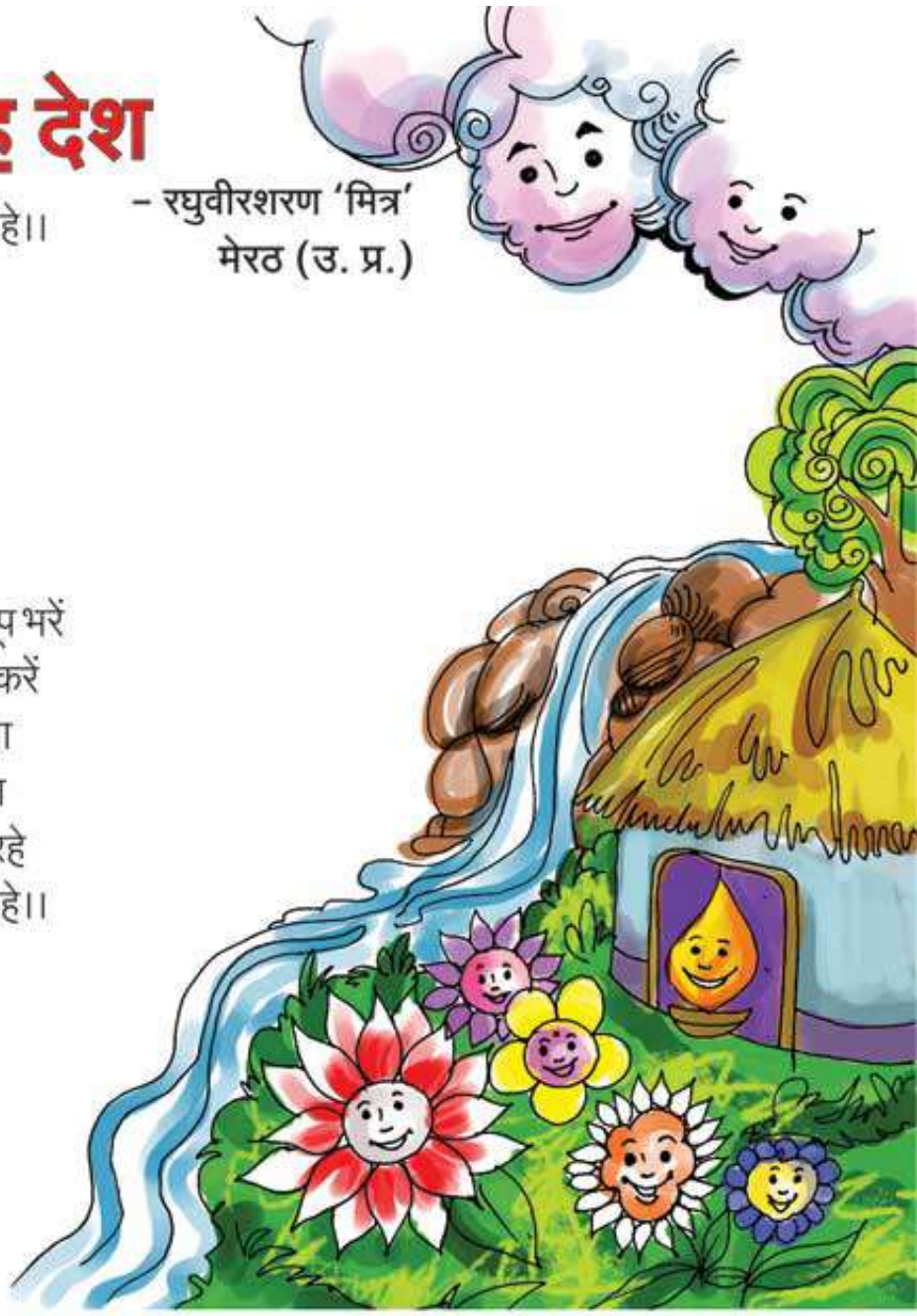

स्वतंत्रता का उत्सव

– सूर्यप्रकाश मिश्र

सूरज लेकर चला तिरंगा
चली हिमालय की चोटी से, गीत देश के गाती गंगा।
गेंदा, सूरजमुखी, चमेली कोई नहीं रहेगा फीका।
तितली लगा रही फूलों को, घूम–घूम कुंकुम का टीका।
सजी गिलहरी और मोर ने पहना कुर्ता रंग–बिरंगा।।
झूम रहे हैं खेत बाग वन, हरित रंग लगता गहराया।
आसमान धरती सब खुश हैं, स्वतंत्रता का उत्सव आया।
सागर रंगा गेरुए रंग में, भगवा रंग में कंचनजंघा।।

– वाराणसी (उ. प्र.)

प्यारा भारत वर्ष हमारा

– राधेश्याम आर्य

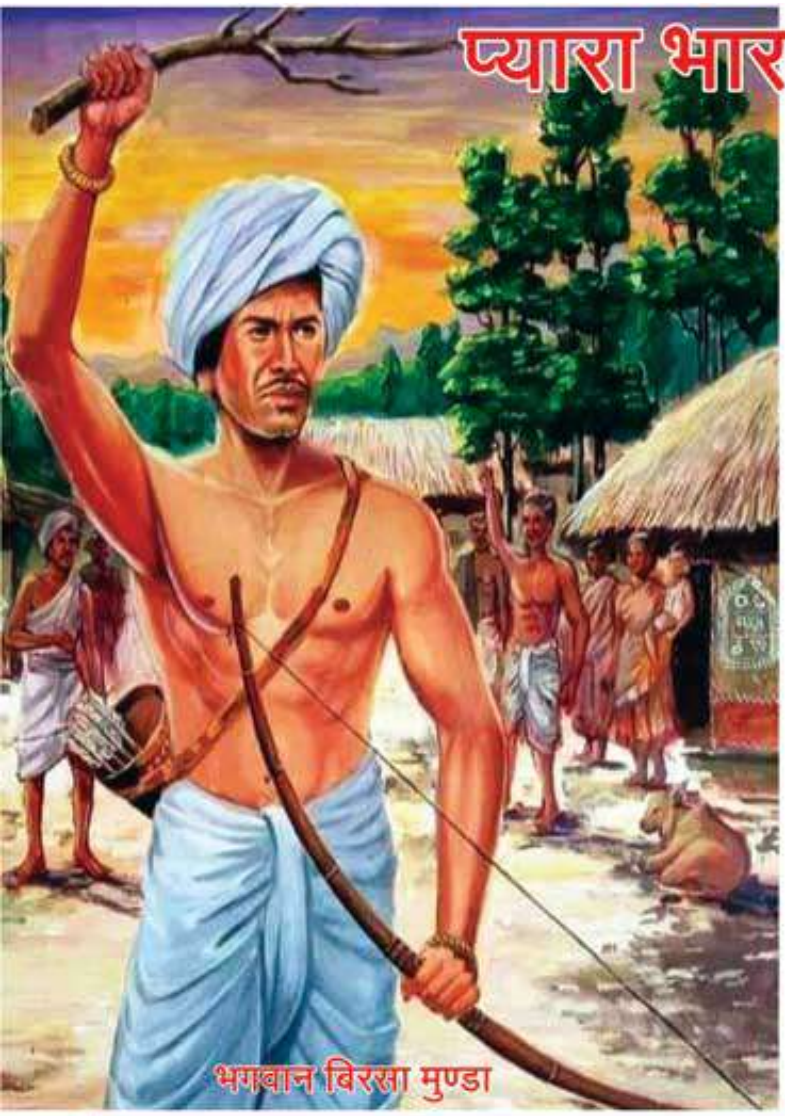
भगवान बिरसा मुण्डा

हम इसके हैं नन्हें–मुन्ने, हम हरदम रहते चौकन्ने।
शौर्य कथाओं से हम सबकी, रंगे हुए इतिहास के पन्ने।
हम सबके अतुलित गौरव की, गाथा गाता यह जग सारा।।
प्यारा भारत वर्ष हमारा।

उत्तर में गिरिराज हिमालय, बहती सदा समीर मलय।
दक्षिण में चरणों को धोता, हिन्द महासागर सलिलालय।
कावेरी, नर्मदा, ताप्ती, बहती गंगा, यमुना धारा।।
प्यारा भारत वर्ष हमारा।

हरा–भरा है अपना देश जहाँ गूँजता ऋषि उपदेश।
जिसका कण–कण देता रहता जग को स्वतंत्रता–संदेश।
निर्भय होकर हम बच्चों ने रिपु के दल को है ललकारा।।
प्यारा भारत वर्ष हमारा।

भारत माँ के हम हैं लाल, अरिदल के हित काल कराल।
तिमिर धरा का दूर भगेगा, हम हैं जाग्रत ज्योति मशाल।
हमने किया पराजित अरि को, जब भी माँ ने हमें पुकारा।।
प्यारा भारत वर्ष हमारा।

– सुलतानपुर (उ. प्र.)

हिन्द के बहादुरो!

– रामावतार त्यागी, मुरादाबाद (उ. प्र.)

हिन्द के बहादुरो! शूरवीर बालको!
थाम लो सम्हाल कर देश की मशाल को।
अंधकार का गुरूर आनबान तोड़ दो।
बालको! भविष्य के लिए मिसाल छोड़ दो।
दो नई–नई दिशा वर्तमान काल को।
थाम लो सम्हाल कर देश की मशाल को।
देश माँगता कि खून से रंगा गुलाब दो।
तुम उठो सिपाहियों चीन को जवाब दो।
झूम–झूम कर मलो युद्ध के गुलाल को।
थाम लो सम्हालकर देश की मशाल को।
दूर तक जमीन पर शानदार जय लिखो।
तुम विशाल सिंधु पर जय लिखो विजय लिखो।
तोड़ दो पिशाच के तुम हरेक जाल को।
थाम लो सम्हालकर देश की मशाल को।

बाल सैनिक

– रमापति शुक्ल

अम्मा! एक तिरंगा झण्डा मुझको भी मँगवा दो ना।
लाल केसरी रंग में कुर्ता खद्दर का रंगवा दो ना।
कुर्ता पहिन हाथ ले झण्डा सैनिक वीर कहाऊँगा।
भारत माता की जय कहते लड़ने को मैं जाऊँगा।।
माँ कल बाबूजी कहते थे बहुत बड़ी अम्मा है एक।
भारत माता कहलाती वह सीधी सादी सच्ची नेक।।
बाबूजी की और तुम्हारी मामा मामी नानी की।
सब लोगों की अम्मा हैं वे नानी की भी नानी की।।
लेकिन उनके हाथ बँधे हैं पड़ी हुई हथकड़ियाँ हैं।
बन्द जेल में बैठ अकेली गिनती दुख की घड़ियाँ हैं।।
उन्हें छुड़ाने गए हुए थे तिलक लाजपत मोतीलाल।
लड़त–लड़ते मरे 'दास' भी पर माँ का दुख सके न टाल।।
औरत होकर कमला जी भी लड़ी वीरता से दिनरात।
मगर हथकड़ी खुली न माँ की कैसी भारी दुख की बात।।
माँ के ही दुख से पागल हो निकले थे सुभाष घर छोड़।
प्राणों की आहुति देकर भी सके न उनकी कड़ियाँ तोड़।।
गाँधी बाबा और जवाहर उन्हें छुड़ाने जाते हैं।
उनके लिए प्राण देने को सबको संग बुलाते हैं।।
अम्मा! सैनिक मुझे बना दो मैं भी लड़ने लाऊँगा।
भारत माँ को छुड़ा सकूँगा तभी लौटकर आऊँगा।।

(यह कविता द्वितीय स्वतंत्रता संग्राम के समय तत्कालीन नेतृत्व से प्रेरित होकर लिखी गई थी। आज के बच्चों को स्वतंत्र भारत में स्वतंत्र भारत की रक्षा हेतु संकल्पित होना है।)

– नारायणपुर (उ. प्र.)

धर्म हमारा है

– भगवती प्रसाद द्विवेदी

हम हैं वीर सिपाही हमको भारत प्यारा है।
मातृभूमि की रक्षा करना धर्म हमारा है।

रोज सबेरे सूरज दादा नयी रोशनी लाते।
दिनभर सबको दे उजियारा शाम को ही सुस्ताते।
'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' अपना नारा है।
मातृभूमि की रक्षा करना धर्म हमारा है।।

आसमान में अनगित तारे पर न रोशनी उनमें।
चंदामामा एक चांदनी बिखेरते जन–जन में।
हम बगिया के फूल और यह चमन हमारा है।
मातृभूमि की रक्षा करना धर्म हमारा है।।

ध्रुव तारे में अटल रहेंगे अपना दृढ़ निश्चय है।
लक्ष्य एक राहें अनेक हैं श्रम के साथ विजय है।
जागो वीर जवानो! माँ ने हमें पुकारा है।
मातृभूमि की रक्षा करना धर्म हमारा है।।

– पटना (बिहार)

सीमा रक्षा

– रामसिंहासन सहाय 'मधुर'

सीमा पुकारती बार–बार, उत्तर सम्हाल दक्षिण सम्हाल।
किसकी तरूणाई लाल लाल, किसका वक्ष स्थल है विशाल।
ललकार रहा है महाकाल खेलो भारत के नौनिहाल!
जो शत्रु ताकता सीमा पर, तुम लो उसकी आँखें निकाल।।

हिमवान हमारा उत्तर है, सीमा है पत्थर की लकीर।
दक्षिण की सीमा वहाँ, जहाँ तक रामचन्द्र के उड़े तीर।
पूरब सम्हाल पश्चिम सम्हाल, मुस्काता आया–गया साल।
संसार हथेली पर उछाल, ले लो भारत के नौनिहाल!

– सागर पाली (उ. प्र.)

अपना देश महान

– बालकृष्ण गर्ग, हाथरस (उ. प्र.)

भारत भूमि महान। हम इसकी संतान।
मरते दम तक रखनी होगी हमको इसकी शान।
अपना देश महान।।
इस माटी में पले बढ़े चलना सीखा गिर–पड़ कर
इस धरती ने प्यार दिया माँ की गोदी से बढ़ कर
इसका कण–कण है हम सबको ईश्वर का वरदान।
अपना देश महान।।
उत्तर खड़ा हिमालय, दक्षिण में सागर है लहराता।
पहला दृढ़ता और दूसरा मर्यादा सिखलाता।
गंगा, गोदावरी कर रही पावनता का मान।
अपना देश महान।।
सत्य, अहिंसा, प्यार–प्रीति की, हम भी ज्योति जलाएँ।
ऊँच–नीच का भेद मिटाकर, सबको गले लगाएँ।
श्रम से दूर करें निर्धनता, बालक, वृद्ध, जवान।
अपना देश महान।।

भारत है मेरा घर

– निरंकार देव 'सेवक'

रानी बिटिया चली घूमने, दिल्ली से आगे बढ़।
चलते–चलते, चलते–चलते, पहुँच गई चंडीगढ़।
चण्डीगढ़ से जयपुर पहुँची, जयपुर से रामेश्वर।
रामेश्वर से चलते–चलते, लौट चली आई घर।
माँ ने पूछा ''रानी बिटिया! कहाँ गई थी बाहर?''
''कहीं नहीं माँ!'' बिटिया बोली ''मैं थी घर के अंदर।''
''घर के अंदर? रानी बिटिया। ऐसा झूठ सरासर!''
''झूठ नहीं माँ! सच कहती हूँ भारत है मेरा घर।''

– बरेली (उ. प्र.)

मिट्टी के बेटे

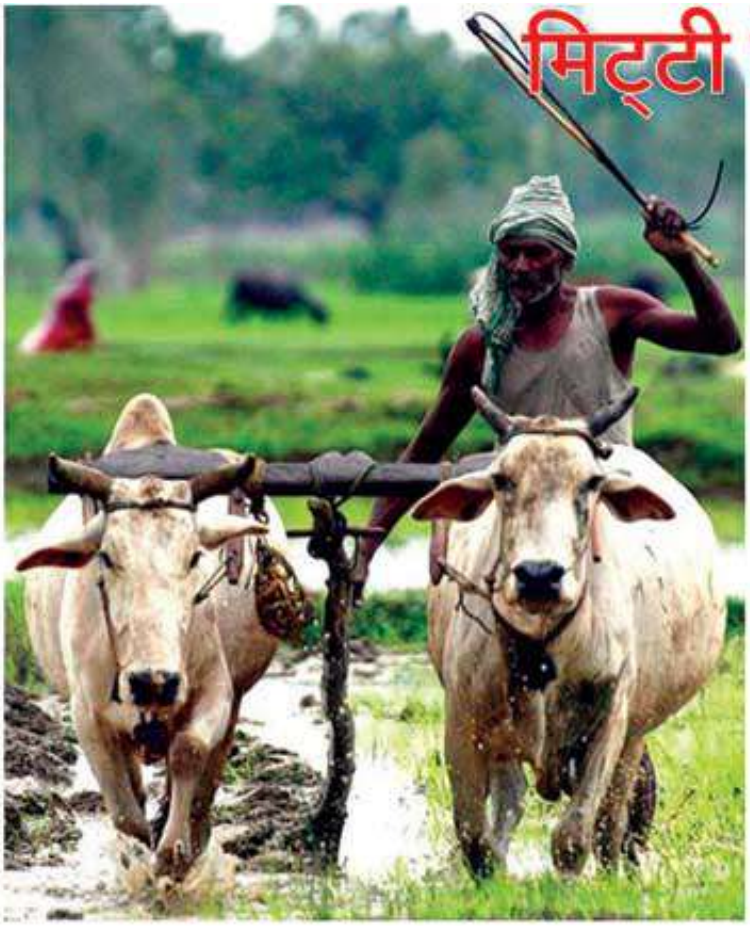

– मदनमोहन व्यास

इस मिट्टी के बेटे हम। इस मिट्टी पर लेटे हम।
इस मिट्टी पर बड़े हुए। लोट पोट कर खड़े हुए।
इसकी आन निभाएँगे। इस पर जान गवाएँगे।
इसकी सीमाओं के रक्षक। वीर जवान जिन्दाबाद।
हिन्दुस्तान जिन्दाबाद।

देश खड़ा है पैरों पर। नहीं भरोसा गैरों पर।
बालक, वृद्ध, जवान सभी। ये मजदूर, किसान सभी।
कर्त्तव्यों में लगे हुए। तन से मन से जगे हुए।
राष्ट्रहितों के लिए स्वार्थ का यह बलिदान जिन्दाबाद।
हिन्दुस्थान जिन्दाबाद।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

साहसी सैनिक

– रामभरोसे गुप्त 'राकेश'

देश भक्ति के गीत सुनाते, वीर साहसी सैनिक हम।
कभी न कड़वे वचन बोलते, वाणी रखते सदा नरम।
अन्यायों को देख हमारा, पल में होता खून गरम।
हँसी–खुशी के फव्वारे हैं, नहीं सताता हमको गम।

दुश्मन के सिर पर गिरते हैं, बन करके हम भीषण बम।
दूर करेंगे श्रम से अपने, निर्धनता का सारा तम।
स्वर्ग सदृश इस भारत भू–पर, लेंगे सौ–सौ बार जनम।
देश भक्ति के गीत सुनाते, वीर साहसी सैनिक हम।

– आलमपुर (म. प्र.)

गौरवगान

– डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'
जयपुर (राजस्थान)

कोटि कोटि कंठों से गूंजे तेरा गौरव गान
जय जय भारत देश महान।

ऊँचा भाल हिमालय तेरा, पाँव धो रहा सागर।
गंगा यमुना सरस्वती भी, संगम करती आकर।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, सब दिशि एक समान।
जय जय भारत देश महान।

देव, देवियाँ, संत, धर्मगुरु, ध्यानी, मानी, ज्ञानी।
अपने प्रण पर मिटने वाले मुक्ति युद्ध सेनानी।
वे सब जिनके सत्कर्मों का, जगती भर में हुआ बखान।
जय जय भारत देश महान।

हम जो रक्षक यहाँ धर्म के, संस्कृति मानवपन के।
कभी नहीं झुकते आए हैं, आगे बौनेपन के।
संकल्पों की ध्वजा हमारी, समता का अभिमान।
जय जय भारत देश महान।

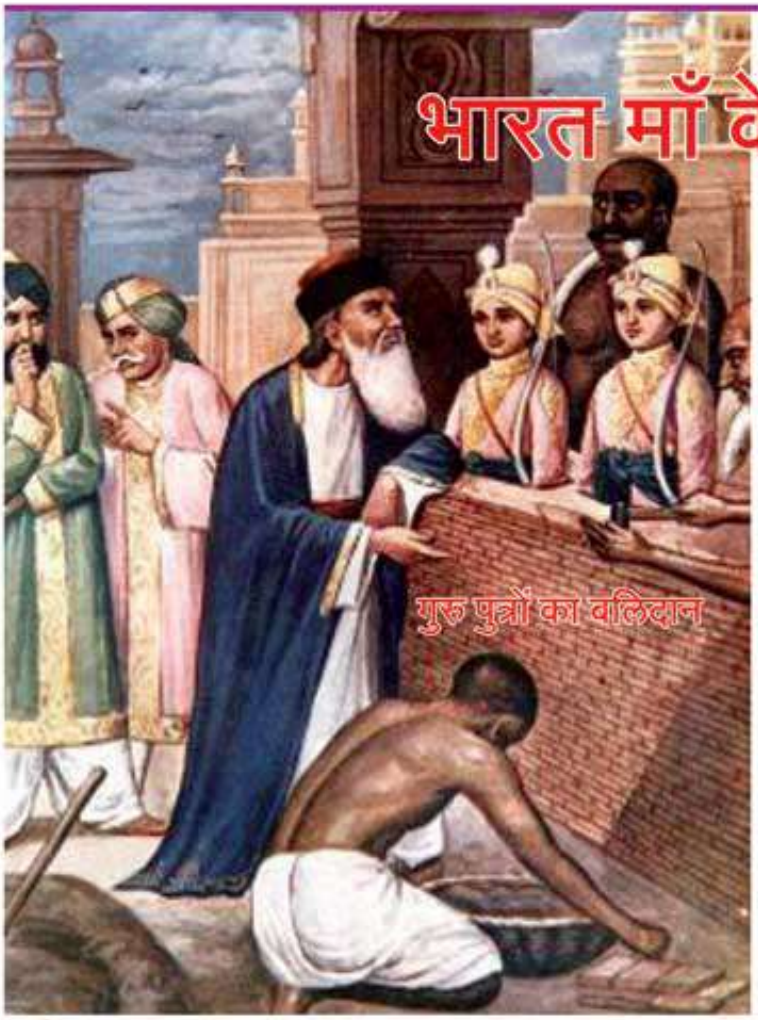

भारत माँ के रखवारे

– शिव अवतार 'सरस'

हम भारत माँ के रखवारे,
हम भी लड़ने जाएँगे।
दुश्मन ने यदि आँख दिखाई,
हम उससे भिड़ जाएँगे।
भारत प्यारा देश हमारा
हम इसके प्यारे बच्चे।
बड़े लोग हो चाहे जैसे
पर हम बालक हैं सच्चे।
जोरावर सिंह और फतेहसिंह
जैसे वीर कहाएँगे।
देश धर्म की रक्षा के हित
हम मर मिट भी जाएँगे।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

हमारा देश महान

– रामकुमार गुप्त

हमारा प्यारा देश महान।
इसकी माटी कंचन इसका पानी सुधा समान।

सागर जिसके चरण पखारे, रवि शशि नित आरती उतारे।
मस्तक पर शोभित है जिसके शुभ्र मुकुट हिमवान।।
वेदों की आदर्श ऋचाएँ, अमर पुराणों की गाथाएँ।
योगीराज ने दिया यहीं पर, कर्मयोग का ज्ञान।।

पुरी अयोध्या मथुरा काशी, ऋषि मुनि साधु संत संन्यासी।
भक्ति ज्ञान वैराग्य त्रिवेणी का है पावन स्नान।

हरिश्चन्द्र दधीचि से त्यागी हुए जहाँ बंदा बैरागी।
राणा शिवा सुभाष भगतसिंह है भारत की शान।।

लक्ष्मी दुर्गा–सी क्षत्राणी, सारंधा हाड़ी की रानी।
नहीं पद्मिनी के जौहर को भूला हिन्दुस्थान।।
केशव, तुलसी, सूर, कबीरा, बंकिम, शरद, जायसी, मीरा।
राधा माधव का गुन गाते, विद्यापति रसखान।

– खीरी (उ. प्र.)

बालक हिन्दुस्थान के

– अवध किशोर सक्सेना, दतिया (म. प्र.)

हम बालक हिन्दुस्तान के। गौरव है देश महान के।
भारत भू की अखंडता के, हम सब बालक हैं रखवाले।
दीन और दुखियों के हम सब, आँखों के हैं नव उजियाले।
हम पक्के हैं ईमान के। हम बालक हिन्दुस्थान के।

मेहनत के बीजों को बोकर, सब लाएँगे खुशहाली।
भेद–भावना मेटेंगे हम, पिला प्रेम रस की प्याली।
हम नाविक हैं तूफान के। हम बालक हिन्दुस्थान के।
भारत का निर्माण करेंगे, हम अपने पौरुष बल से।
गाँधी और सुभाष की धरती, गौरवान्वित हमसे।
सूरज हम नई विहान के, हम बच्चे हिन्दुस्थान के।

बच्चों ने ठाना है

– गोपाल माहेश्वरी

स्वतंत्रता के अमृत उत्सव पर बच्चों ने ठाना है।
भारत माँ को सारे जग में पहले क्रम पर लाना है।।

हम हैं भारतवासी बच्चे, प्रतिभाओं से खूब भरे।
फिर सोचें हमको क्या बनना, पहले यहीं विचार करें।
देश जहाँ पीछे हो अपना, आगे वहीं बढ़ाना है।
विश्व गुरु कहलाता था, वह गौरव फिर से पाना है।।

वैज्ञानिक हो बुद्धि हमारी, नए शोध नव आविष्कार।
भारत माँ ने सिखलाया है, प्रकृति माता, जग परिवार।
मानवता हो जिससे पोषित, वही पंथ अपनाना है।
ज्ञान कला कौशल शिक्षा का भारत–रंग चढ़ाना है।

सीख पूर्वजों ने दी जग को कैसे जीते हैं जीवन ?
भारत जन ने नगर बसाना सिखा जुटाए संसाधन।
ज्ञान और विज्ञान कला व्यापार उन्हीं से जाना है।
जिसे आधुनिक बतलाते हो हमको ज्ञान पुराना है।।

संसाधन की कमी नहीं है, प्रकृति भी वरदानी है।
युगों–युगों से हम सब बच्चे, परंपरा से ज्ञानी हैं।
सदा–सदा से भारत ने ही, जन्मा नया जमाना है।
है अमृत भारत स्वतंत्र, कुछ बिगड़ा पुन: बनाना है।।

जिसे सोच जग इतराता है, हम उससे आगे सोचें।
सिखलाएँ, विज्ञान न दे मानवता के पग को मोचें।
बल, ऊर्जा निर्माणी हो अब, नाश से उसे बचाना है।
यांत्रिकता की होड़ में मानवपन को नहीं गँवाना है।

– इन्दौर (म. प्र.)

तिरंगा दिलवा दो माँ!

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव

मुझे तिरंगा दिलवा दो माँ! मुझको भगवा रंगवा दो माँ!
भगतसिंह, सुखदेव, बिस्मिल, आजाद सरीखा वीर बनूँ मैं।
अपना तन–मन–धन देकर, भारत माँ की तकदीर बनूँ में।।
दुश्मन से लड़ने की खातिर अब सीमा पर भिजवा दो माँ।
मुझे नहीं लालच, यश, धन का, मुझे देश प्यारा लगता है।
अपनी भारत माता का घर, सब जग से न्यारा लगता है।
लगा रहूँ हर दम सेवा में, मुझको सैनिक बनवा दो माँ।।
भ्रष्ट तंत्र की सड़ी व्यवस्था से लड़पाऊँ वह बल देना।
सत्य, अहिंसा की ताकत से जीत सकूँ यह संबल देना।
करुणा, दया, प्रेम के दीपक, जन के मन में जलवा दो माँ।।
न फैले आतंक कहीं पर हिंसा कहीं न हो यह वर दो।
मेरे प्यारे भरत देश के जन–जन का मन निर्मल कर दो।
मुक्त गगन के धवल चन्द्र से प्रेम सुधा रस बरसा दो माँ।।

– छिंदवाड़ा (म. प्र.)

फूलों की मुस्कान

– पूरन सरमा, सिकंदरा (राज.)

हम फूलों की मुस्कान।
गाने की मीठी तान।।
हम सच्चे वीर सिपाही।
हम हैं काँटों के राही।।
हम मुश्किल में मुस्काते।
हम कभी नहीं घबराते।।
जब जो भी मन में ठानी।
फिर दे दी है कुर्बानी।।
हम भारत राष्ट्र विधाता।
हम नवल राष्ट्र निर्माता।।
हम प्रेम–पौध पनपाते।
खुशियों के पेड़ लगाते।।
हम हैं सूरज के साथी।
आशा की जलती बाती।।
हम इस उपवन के माली।
महकाते डाली–डाली।।

हमारा देश

– अश्वनी कुमार पाठक

दुनियाभर के देशों से है, अलग हमारा देश।

भाँति–भाँति के लोग यहाँ पर, एक सभी का मूल।
गए पिरोए इक धागे में, रंग–बिरंगे फूल।
लूंगी, धोती, टोपी, पगड़ी अलग–अलग हैं वेश।
दुनियाभर के देशों से है अलग हमारा देश।।

उत्तर में गिरिराज अड़ा है चादर हिम की तान।
दक्षिण में सागर गाता है लहर–लहर कर गान।
पक्षु–पक्षी हैं निर्भय देते, जीवन का संदेश।
दुनिया भर के देशों से है अलग हमारा देश।।

उसके आँचल तले पले हम, ममता के संबंध।
शत्रु मिला देंगे माटी में, माटी की सौगंध।
हम सब भाई बहिन हमारा, स्नेह सिक्त परिवेश।
दुनियाभर के सब देशों से अलग हमारा देश।।

– सिहोरा (म. प्र.)

अपना यह तन मन

– राजनारायण चौधरी

अपना यह तन मन जीवन, भारत के लिए समर्पित है।

लिया जन्म हमने जिस भू पर, उसकी रक्षा का व्रत लें।
पड़े कटाना शीश अगर तो, झट गर्दन आगे कर दें।
हमसे ही तो देश हमारा युगों–युगों से रक्षित है।।

किसकी हिम्मत करे सामना, हम जो सीना तान चलें।
छोटा पड़ जाए अम्बर भी, मन में ऐसे भाव पलें।
स्वाभिमान की अल्हड़ लहर उठा करती मन में नित है।।

दिशा–दिशा आरती हमारी, सदा उतारा करती हैं।
अक्षत चंदन लिए किरण, सामने हमारे झरती है।
मातृभूमि की पूजा का, अक्षर रग–रग में अंकित है।

– हाजीपुर (बिहार)

बढ़ते हुए कदम

– कृष्ण 'शलभ'

आँधी आए तूफान उठे, अब नहीं डरेंगे हम।
मंजिल से पहले नहीं रुकेंगे, बढ़ते हुए कदम।
हमने डरना कब जाना है हम दीवाने ठहरे।
हम लगा कहकहे चलें, अरे हम मस्ताने ठहरे।
सारी धरती झूमे गाए, हम हैं ऐसी सरगम।
हम ही हैं जो वीरानों को भी चमन बना सकते।
ले ठान अगर तो बंजर में भी फूल खिला सकते।।
हम नदिया से, हम सागर से, हम मेघों के परचम।
हम अंधकार में उजियारे की फसल उगाएँगे।
हम ही भागीरथ बन विकास की गंगा लाएँगे।
जो कहें हमें छोटा कह लें पर नहीं किसी से कम।।

– सहारनपुर (उ. प्र.)

शीश झुकाते हैं

– सांवलाराम नामा

भारत माँ के चरणों में हम शीश झुकाते हैं।
हरी भरी भूमि हमारी देवभूमि कहलाती है।
इसकी महिमा गाते–गाते जिह्वा नहीं अघाती है।
पंथ अनेक दिए हो जिसने हम उसके गुण गाते हैं।।
स्वयं ईश ने मानव बनकर, इस धरती पर जन्म लिया।
रावण और कंस से पापी दुष्टों का संहार किया।
राम, कृष्ण, गौतम, नानक सब भारत के गुण गाते हैं।।
कालिदास जैसे कवियों ने, इसका रूप सजाया।
लेकर नाम शारदा का, भारत का मान बढ़ाया।
सूर और तुलसी से कवि भी मंगल गीत सुनाते हैं।
वीर भगत चन्द्रशेखर, से भारत माता के सपूत हैं।
सीमाओं पर लड़ने वाले सब भारत के देवदूत हैं।
प्राणों की बलि देकर अपने इसकी ध्वजा उड़ाते हैं।

– भीनमाल (राजस्थान)

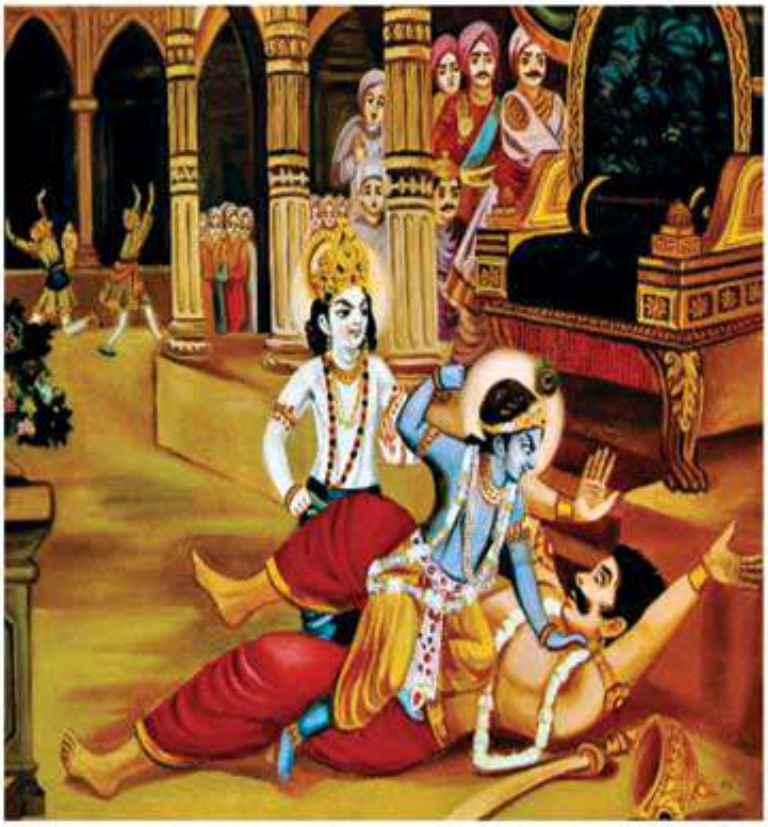

एकता के नाम

– बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'

देश की पुकार पर बढ़ेंगे एक साथ हम।
चोटियाँ पहाड़ की चढ़ेंगे एक साथ हम।
फूल एक डाल के खिलेंगे एक साथ हम।
भेद भूलकर गले मिलेंगे एक साथ हम।।
देश की स्वतंत्रता की हम ध्वजा उड़ाएँगे।
एक साथ मिल सदा चलेंगे एक साथ हम।
देश प्रेम के दिए जलेंगे एक साथ हम।।
सावधान हो करेंगे देखभाल देश की।
हम मदद न लेंगे कभी भी कहीं विदेश की।
एकता के नाम पर जिएँगे एक साथ हम।
सुधा मिले या विष हमें पिएँगे एक साथ हम।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

देवपुत्र

– गोविन्द भारद्वाज

बाल शहीद खुदीराम बोस

देवपुत्र भारत के मान देश का बढ़ाएँगे।
लगा प्राणों की बाजी काम राष्ट्र के आएँगे।
माना नन्हें–मुन्ने हम मगर किसी से कम ना।
बन सीमा के प्रहरी मर भी जाएँ तो गम ना।
नाम कर वतन का मान देश का बढ़ाएँगे।
धूल चटा दुश्मन को लौट के घर आएँगे।
झुकने न दें तिरंगा शपथ शहीदों की लें।
कदम–कदम मिलाते हम संग सभी निकले।
स्वतंत्रता का परचम आसमान तक उड़ाएँगे।
भारती की जय के ही गान गाएँगे।।

– अजमेर (राजस्थान)

बढ़ते जाएँगे

– डॉ. विनोदचंद्र पाण्डेय 'विनोद'

हम बालक बढ़ते जाएँगे।
हम नहीं जानते हैं रुकना। हम नहीं जानते हैं झुकना।
हम उन्नति पथ अपनाएँगे। हम बालक बढ़ते जाएँगे।।

हम नहीं किसी से डरते हैं। उत्साह हृदय में भरते हैं।
अपना कर्त्तव्य निभाएँगे। हम बालक बढ़ते जाएँगे।।

विघ्नों की कुछ परवाह नहीं। सुख सुविधाओं की चाह नहीं।
साहस सदैव दिखलाएँगे। हम बालक बढ़ते जाएँगे।।

मन में स्वदेश का प्यार भरा। जीवन में ओज अपार भरा।
भारत की गरिमा गाएँगें। हम बालक बढ़ते जाएँगे।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

हम हैं पहरेदार

– शिवचरण चौहान

हम हैं पहरेदार देश के हमे हैं पहरेदार।

मित्रों के हम परम मित्र हैं दुश्मन के हम काल।
जननी जन्मभूमि के रक्षक हम भारत के लाल।
प्राणों से भी बढ़कर अपने हमें देश से प्यार।।

हमने सीखी शान शिवाजी से राणा से आन।
स्वतंत्रता के लिए सदा होते आए बलिदान।
केसरिया बाना पहने हैं हम हर पल तैयार।।

पौरुष पर है हमें भरोसा लक्ष्य हमें है याद।
हारा सदा हमारी हिम्मत के आगे फौलाद।
वीरों की हम संतानें झुकता जिनको संसार।।

– कानपुर (उ. प्र.)

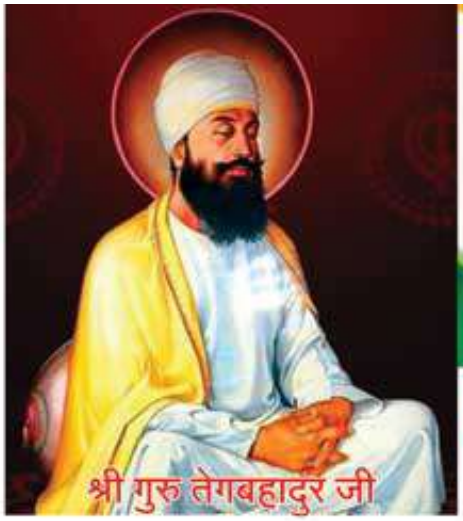

देश यह प्यारा है

– आचार्य भगवत् दुबे

निराली भारत माँ की शान। विश्व में बाँटा इसने ज्ञान।
देश यह प्यारा है। धरा पर न्यारा है।
हिमालय पहरे पर दिनरात। सिन्धु है दक्षिण में तैनात।
मलय का सुरभित बहे समीर। यहाँ पावन नदियों का नीर।
प्रेम की बहती निर्मल धारा है। देश यह न्यारा है।।
बहादुर तेग गुरू गोविन्द। तपस्वी राष्ट्रभक्त अरविन्द।
भगतसिंह शेखर वीर सुभाष शौर्य का चर्चित है इतिहास।।
शहीदों का अंकित यश सारा है। देश यह न्यारा है।।
हमें इन वीरों पर है नाज। इन्हीं से चमके माँ का ताज।
हजारों हुए यहाँ बलिदान। निछावर किए राष्ट्रहित प्राण।
देश ने जब–जब इन्हें पुकारा है। देश यह न्यारा है।

– गढ़ा (म. प्र.)

भारत देश हमारा

– जगदीश गुप्त

प्यारा भारत देश हमारा प्राणों से भी प्यारा है।
जान लुटाना इसकी खातिर हमको सदा गंवारा है।।
याद करो उस कुर्बानी को दी है जो हँसते–हँसते।
चूम के फंदा वीरों ने फाँसी को स्वीकारा है।।
वीर भगतसिंह राजगुरू नमन तुम्हें हम करते हैं।
इतिहास बनाया जिन वीरों ने नाज उन्हीं पर करते हैं।।
खून के बदले आजादी उद्घोष बंग से गूंजा था।
लहू से अपने वीरों ने तब आजादी को पूजा था।।
जब–जब छाएँ काले बादल उनको हमें हटाना है।
सबकी आशा के सूरज को इस नभ में चमकाना है।।
हम ही इसके रखवाले हैं ये उपवन नया निराला है।
प्यारा भारत देश हमारा प्राणों से भी प्यारा है।।

– कटनी (म. प्र.)

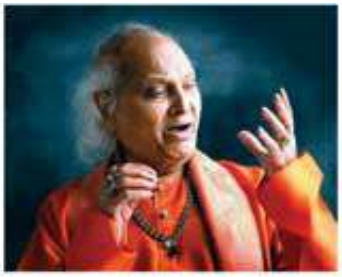

आओ बच्चो! गाओ बच्चो!

– रुद्रपाल गुप्त 'सरस'

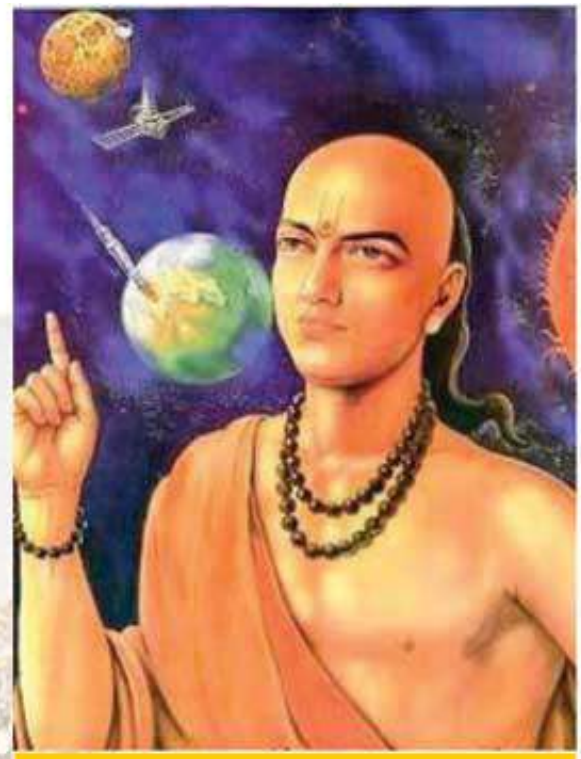

आओ बच्चो! गाओ बच्चो! गीत नए अभिमान का।
फहराना है हमें विश्व में झण्डा अपने ज्ञान का।।

मत भूलो अपने भारत का गरिमामय इतिहास है।
आगे बढ़ने का आवश्यक सब कुछ अपने पास है।
हमने श्रम का आदर करके अपना भाग्य संवारा है।
जय जवान की जय किसान की ऐसा अपना नारा है।
अपने मन में प्यार बसा है खेत और खलिहान का।।

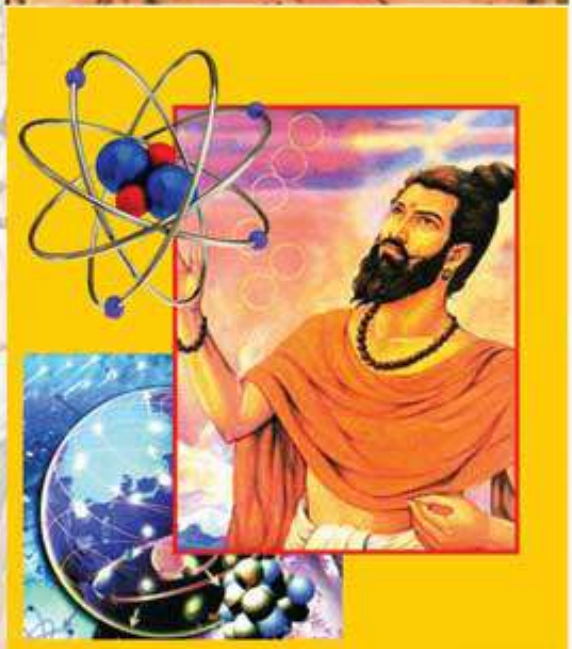

जीवन का हर अर्थ बताते, रामायण के छन्द मिले।
अन्तर का अविवेक मिटाने हमें विवेकानन्द मिले।
अपनी दृढ़ता से अंग्रेजी सभी इरादे धूल मिले।
लहू दिया अनगिन वीरों ने आजादी के फूल खिले।
टूट न पाए पत्ता कोई हरे–भरे उद्यान का।।

अपना आर्यावर्त रहा है आविष्कारों में आगे।
यहीं ज्ञान उजियारा फैला सबसे पहले हम जागे।
कहीं कदाचित नहीं बढ़ाया अन अधिकार कदम अपना।
उत्तर आततायी को समुचित देने का है दम अपना।
गौरव हमको कायम रखना भारत देश महान का।

– सण्डीला (उ. प्र.)

डॉ. जगदीशचन्द्र बसु

डॉ. होमी जहाँगीर भाभा

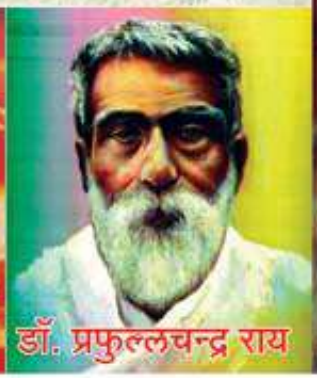

डॉ. प्रफुल्लचन्द्र राय

प्यारा हिन्दुस्थान

– नरेश मालवीय

शीश मुकुट हिमगिरि–सा सोहे।
सागर नित चरणों को धोए।
पूरब पश्चिम तट मन भावन।
इस पर मथुरा और वृन्दावन।
जन्मे जहाँ भगवान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्थान।
राम, कृष्ण, गौतम की धरती।
गंगा, यमुना पावन करती।
नदी नर्मदा का स्वर कल–कल।
सत्य अहिंसा का इसमें बल।
वीरों का गुणगान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्थान।
भिन्न वेष जाति और बोली।
ज्यों धरती पर सजी रंगोली।
सबमें प्रेम–प्रतीति परस्पर,
धरती को देते श्रम सीकर।
भरें खेत खलिहान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्थान।

पढ़े लिखे होंगे नर–नारी।
देखेंगी तब दुनिया सारी।
कठिन परिश्रम और एकता।
नया ज्ञान संग रहे नेकता।
लाए नया विहान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्थान।
देख तिरंगे को लहराता।
हर भारतवासी इठलाता।
तन मन धन इस पर न्योछावर
करो प्रतिज्ञा आगे आकर।
आओ वीर महान।
हमारा प्यारा हिन्दुस्थान।

– सीहोर (म. प्र.)

भारत देश

– डॉ. शकुंतला कालरा

आजा बेटा! वीर बहादुर! तुमको गीत सुनाऊँ।
इस देश के कई वीरों का गौरव तुझे बताऊँ।
कुरू वंश का वीर निडर एक बालक तेरे जैसा।
गिनता रहता दाँत शेर के भरत वीर था ऐसा।
इसी भरत से देश हमारा भारत है कहलाया।
शकुंतला का सुत जग जाने कैसा गौरव पाया।।
और एक थी जीजाबाई वीर शिवाजी बेटा।
सुना–सुनाकर वीर कथाएँ मन से सब डर मेटा।
खट्टे दाँत किए दुश्मन के ऐसा वीर सिपाही।
धूल चटाई मुगल शाह को हिन्दू स्वराज का राही।
वीरांगना एक भारत की रानी लक्ष्मीबाई।
लड़ते–लड़ते अंग्रेजों से वीरों की गति पाई।
मान सहित मरना अच्छा है रानी का था नारा।
बाँध पीठ पर पुत्र दुलारा चुन–चुन दुश्मन मारा।
किस–किस का मैं नाम गिनाऊँ जिनने की कुर्बानी।
राजा बेटा! रोज सुने जा हर दिन नई कहानी।

– दिल्ली

कुछ कर दिखलाएँ

– श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

कुछ करने की चाह है जिनको, कौन भला रोकेगा उनको ?
बाधाएँ भी हार मानकर, उनसे सदा–सदा घबराएँ।
चलो चलें कुछ कर दिखलाएँ।

साहस धैर्य बुद्धि है जिनमें, नव उत्साह लगन है मन में।
स्वयं सफलताएँ भी उनके, अभिवादन मैं शीश झुकाएँ।
चलो चलें कुछ कर दिखलाएँ।

झूमें, गाएँ, हम इठलाएँ, चलो चलें कुछ कर दिखलाएँ।

– लहार (म. प्र.)

ऐसा जो कुछ नया–नया हो, अभी तलक न किया गया हो।
ऐसा कठिन कार्य करने का, दृढ़ता से संकल्प उठाएँ।
चलो चलें कुछ कर दिखलाएँ।

बिछे हुए हैं काँटे मग में, फिर भी गति हो अपने पग में।
हे ईश्वर साहस दे हमको, आगे को ही बढ़ते जाएँ।
चलो चलें कुछ कर दिखलाएँ।

देश के प्रथम रक्षा प्रमुख जनरल बिपिन रावत

धन्य जन्मभूमि

– डॉ. राकेश चक्र
मुरादाबाद (उ. प्र.)

धन्य हो जननी जन्मभूमि
तेरा अभिवादन करता हूँ।
तेरी रक्षा की खातिर मैं
सर्वस्व समर्पण करता हूँ।।
मैं वीर बनूँ, रणधीर बनूँ,
दुश्मन को सबक सिखाऊँगा।
मैं करके विश्व विजय हासिल,
भारत का मान बढ़ाऊँगा।
मैं इसी ध्येय को धारण कर,
हर दुश्मन से रण करता हूँ।
मैं सीना ताने बढ़ता हूँ,
हर शैल शिखर पर चढ़ता हूँ।
मुझको अपनी परवाह नहीं,
मैं देश के सपने गढ़ता हूँ।
मैं खाता सौ–सौ घाव भले ही
कभी न आहें भरता हूँ।।

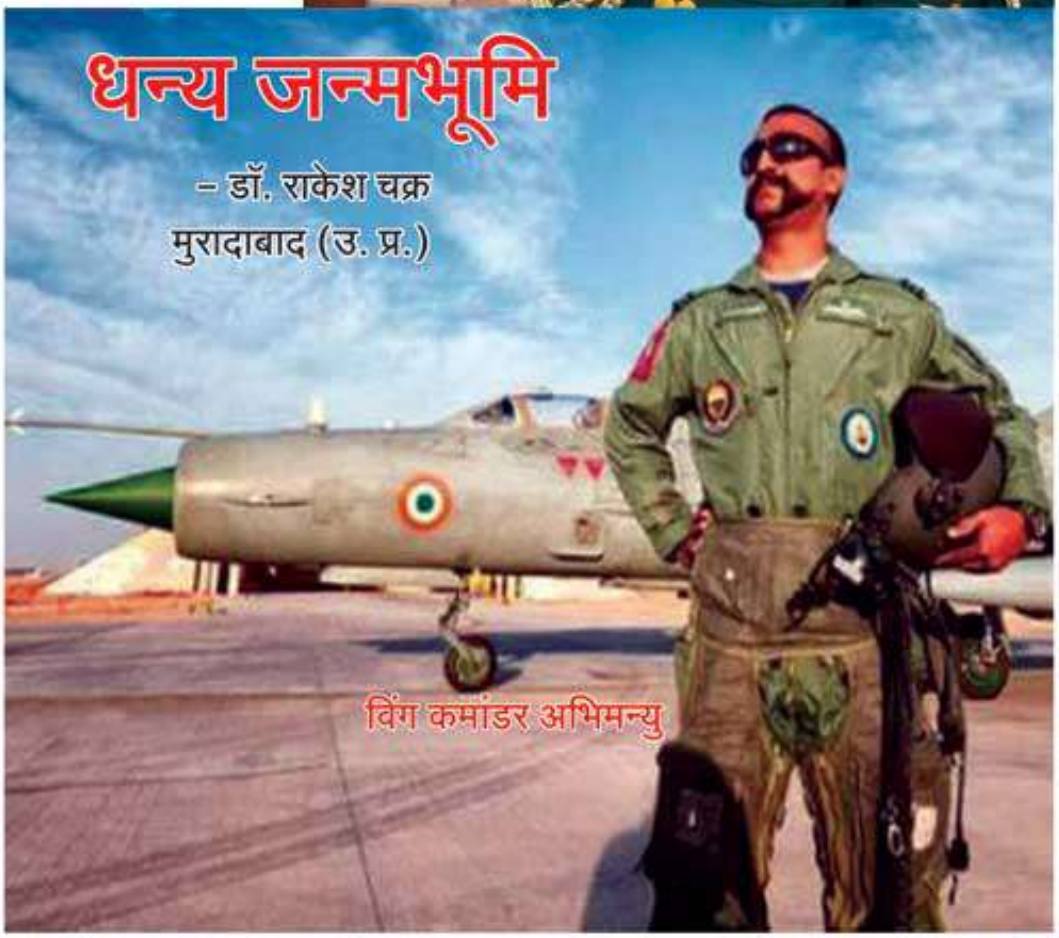

विंग कमांडर अभिमन्यु

फिर खुशियाँ बरसाऊँ

– सुकीर्ति भटनागर

चाहे छोटा बच्चा हूँ जोश भरा रग–रग में
बालक हूँ उस धरती का जहाँ जन्मे थे राम।
गूँज जहाँ है गीता की, पूजे जाते श्याम।
भगतसिंह और गांधी की भूली नहीं कहानी।
गुरु के नौनिहालों की याद मुझे कुर्बानी।
त्याग भरी धरती है यह बलिदानों की गाथा।
जिसका गौरव सुन–सुन मैं हर पल शीश नवाता।
मन करता है मेरा तो कुछ करके दिखलाऊँ।
मैं भी इक दिन बाबूजी! काम देश के आऊँ।
माँ! तुम दो आशीष मुझे मैं ऐसा कर पाऊँ।
सोन–सी इस धरती पर फिर खुशियाँ बरसाऊँ।

– पटियाला (पंजाब)

तिरंगा फहराऊँगा

– पवन पहाड़िया

माँ! मुझको बंदूक दिला दो मैं सेना में जाऊँगा।
जितने दुश्मन पनप रहे उन सबको मार भगाऊँगा।।

छुपकर हमले जो करते हैं उन गद्दारों का अंत करूँगा।
जितने घाव दिए माता को लाशें उनकी पाट भरूँगा।
एक–एक के बदले दस–दस मार उन्हें बतलाऊँगा।।

शांति–शांति का नारा देकर हमने भाई बहुत गँवाए।
रहे सोचते अब सुधरेंगे पर हरकत से बाज न आए।
ब्याज सहित उन सबका बदला मैं चुकता कर आऊँगा।।

बहुत मरे पर पुनरावृत्ति अब ना वे कर पाएँगे।
स्वर्गस्थ शहीदों के खातिर पापी दोजख में जाएँगे।
बच्चों की सेना लेकर मैं ध्वज तिरंग फहराऊँगा।

– डेह (राजस्थान)

सुन्दर देश बनाएँगे

– इन्दु पाराशर, इन्दौर (म. प्र.)

सदा देश की रक्षा के हित शीश कटाते हैं।
रहें चिरऋणी हम उनके जो देश बचाते हैं।।
याद रखें बलिदान कि जिनसे स्वतंत्रता आई।
दे गणतंत्र महान प्रतिष्ठा थी जिससे पाई।।
किंतु बहुत कुछ है जो हम प्रतिदिन कर सकते हैं।
प्रतिदिन के जीवन में परिवर्तन कर सकते हैं।।
पानी व्यर्थ नष्ट होने से हमने जो बचा लिया।
समझो देश के हित में हमने महती कार्य किया।।
सूर्य रोशनी से जो हमने पानी तपा लिया।
सोलर कूकर काम में ले यदि भोजन पका लिया।।
सूरज की किरणों से बिजली बना रोशनी की।
ऊर्जा संरक्षण की हमने सही राह पकड़ी।।
वाहन को हमने दुरुस्त रख सही गती रक्खी।
तेल बचाया हमने ऊर्जा बची बात पक्की।।
पौधा रोपण किया लगाए विविध पेड़ हमने।
स्वच्छ वायु को दिया निमंत्रण पर्यावरण बचे।।
और स्वच्छता का हमने जो बीड़ा उठा लिया।
रोग, गरीबी और शोक का कूड़ा हटा दिया।।
शिक्षा सह संस्कार का यदि हम अलख जगाएँगे।
इस वसुन्धरा पर ही सुन्दर–सा स्वर्ग बनाएँगे।।
बसें, रेल, स्मारक या वन, ताल और नदियाँ।
है कर्त्तव्य हमारा रक्षित ये सम्पत्तियाँ।।
सदा टिकिट ले सफर करें नियमों का पालन हो।
यातायात नियम हम पालें ना उल्लंघन हों।।
छोटी–छोटी बातें यदि जीवन में लाएँगे।
हम सुन्दर समाज बन सुन्दर देश बनाएँगे।।

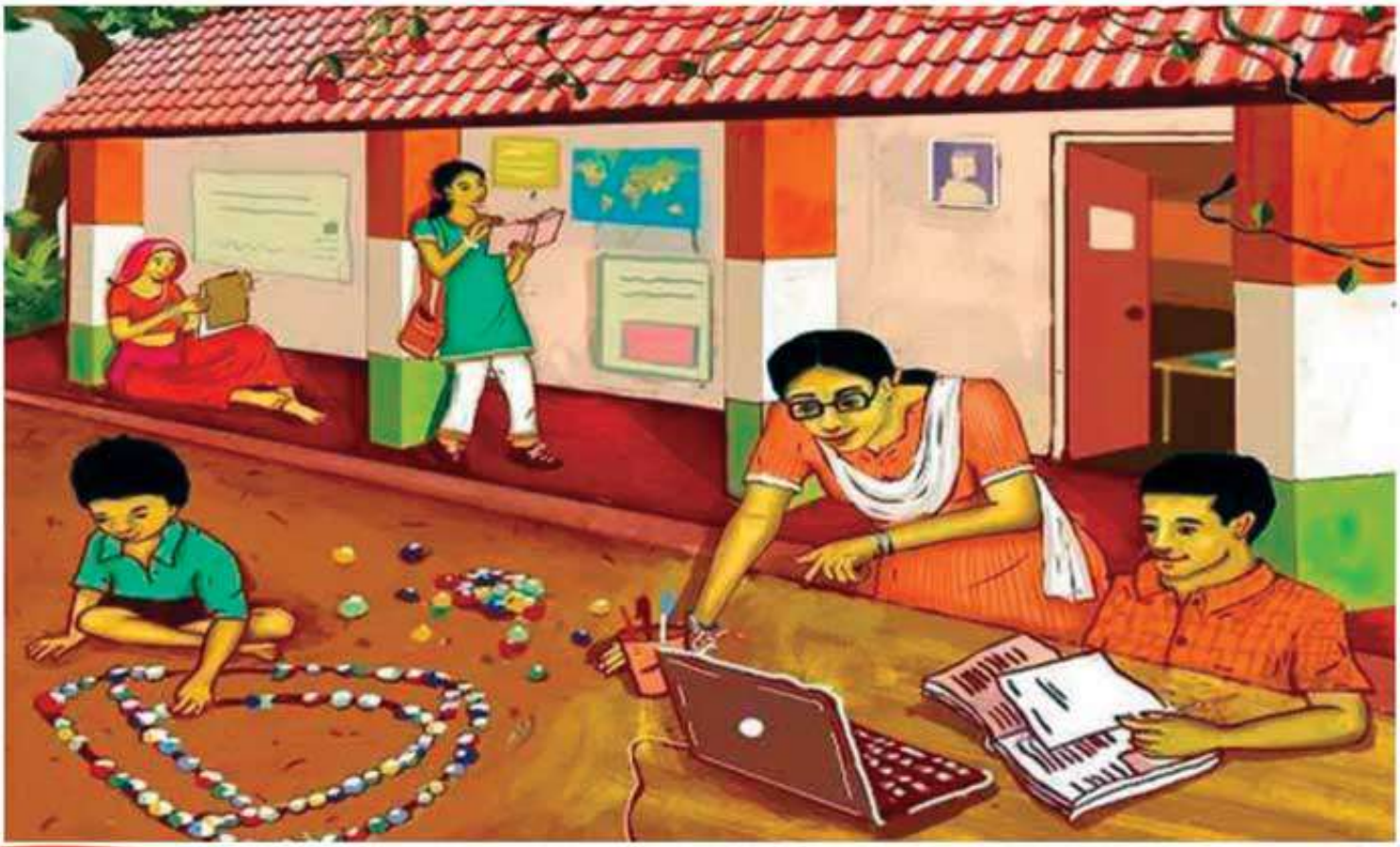

उन्नत होगा देश

– मृगेन्द्र श्रीवास्तव

वर्तमान शुभ, शुभ भविष्य में विकसित होगा देश।
प्रकृति, संस्कृति भारत भू की होगी और विशेष।।

हरियाली से भरे रहेंगे वन, उपवन, बागान।
आनंदमयी होगी यह धरती अपना हिन्दुस्थान।
दु:ख, निराशा, भय या चिंता किंचित रहें न शेष।।

आज के बच्चों के हाथों कल नवभारत की डोर।
स्वर्ण गरुड़ बन विश्वगुरु भारत होगा सिरमौर।।
बढ़े प्रेम, सहकार परस्पर नहीं रहेगा द्वेष।।

शस्त्र, शास्त्र दोनों में होंगे हम सब पारंगत।
करना चाहेगी यह दुनिया अपनी शुभ संगत।।
विश्वशांति का सकल विश्व में गूँजेगा संदेश।।

– बुढ़ार (म. प्र.)

बाल हैं गोपाल हैं

– नंदलाल जोशी

बाल हैं गोपाल हैं,
हम भारत के भाल हैं।
पुरुषोत्तम मर्यादाधारी
द्वापर में श्रीकृष्ण मुरारी
हर युग में कर धर्म ध्वजा ले,
वैजयंती गलमाल है।
हम भारत के भाल हैं।
वीर शिवा, राणा अभिमानी,
गुरुगोविन्द सिंह से बलिदानी।
बन्दा बैरागी जैसों के
तेजस्वी हम लाल हैं।
हम भारत के भाल हैं।
नाना, तात्या, रानी झाँसी
प्रलयंकर बन चूमी फाँसी।
पाण्डे मंगल, कूका, फड़के
धधक उठे वे ज्वाल हैं।
हम भारत के भाल हैं।
भगतसिंह, सुखदेव, आजाद,
सावरकर जी थे फौलाद।
मदन धींगरा, ऊधम, गांधी,
लाल, बाल और पाल हैं।
हम भारत के भाल हैं।
दयानंद, अरविंद, विवेका,
एक तत्व के रूप अनेका।
दिव्य ज्योति केशव, माधव की
स्पंदित हर प्राण है।
हम भारत के भाल हैं।

– जोधपुर
(राजस्थान)

वीर सिपाही

– डॉ. परशुराम शुक्ल

तुम भारत के वीर सिपाही
पथ पर आगे बढ़ते जाना।
कर्त्तव्यों की बलिवेदी पर
हँसकर अपना शीश चढ़ाना।

आँधी, पानी और बवंडर
तुम्हें डिगा ना पाएँगे।
पर्वत नदियाँ और समन्दर
रोक तुम्हें न पाएँगे।

देशप्रेम औ' जन सेवा ही
जीवन का आदर्श तुम्हारे।
शौर्य और साहस के सम्मुख
मृत्युदेव भी तुमसे हारे।

जब होते शहीद सीमा पर
सुर, नर शीश झुकाते हैं।
स्वयं प्रभु परमेश्वर आकर
श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।

– भोपाल (म. प्र.)

देवपुत्र

के स्वामित्व का विवरण

फार्म-४ (नियम-८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
प्रकाशक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार –पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं कृष्ण कुमार अष्ठाना एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(कृष्ण कुमार अष्ठाना)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

बलिदानी वीरों की गाथा

– हरीश दुबे

समय शिला पर लिखी कहानी यह सच्चाई कहती है।
तन के फूल बिखर जाते हैं मन की खुशबू रहती है।।
स्वाभिमान है मान देश का मंत्र हमें यह सिखा गए।
निज प्राणों की आहुति देकर जीना कैसे दिखा गए।
रक्त शिराओं में वीरों की देशभक्ति बस बहती है।
तन के फूल बिखर जाते हैं मन की खुशबू रहती है।।

अमृत उत्सव की बेला में पावन सुधियाँ महक रहीं।
बलिदानी वीरों की गाथा स्वाधीन धरा पर चमक रहीं।
इच्छा शक्ति प्रबल हो तो फिर कहाँ दासता रहती है।
तन के फूल बिखर जाते हैं मन की खुशबू रहती है।।

– महेश्वर (म. प्र.)

अमृत महोत्सव

– राजा चौरसिया, उमरियापान (म. प्र.)

यह स्वतंत्रता प्राणों से प्रिय इसे और फलप्रद बनाएंगे।
गरिमामय अमृत महोत्सव धूमधाम से हम मनाएंगे।।
भगतसिंह शेखर सुभाष से अगणित देशभक्त बलिदानी।
रण में लड़कर मर्दानी वह अमर हुई झांसी की रानी।।
राष्ट्रीय ध्वज का वंदन है जन गण मन है गौरव गाथा।
उन वीरों की पुण्य स्मृति में सबका झुक जाता माथा।।
स्वर्गादपि गरीयसी माटी इसे हृदय में धर सकते हैं।
लेकिन इस पर हो न्यौछावर हम भी सब कुछ कर सकते हैं।।
घोर संकटों के रहते भी सर्वोपरि हो राष्ट्रीयता।
बनी रहे जब तक सूरज है भारत की यह भारतीयता।।
घर का भेदी लंका ढावे इसे ध्यान में भी धरना है।
लेकिन दाल न गलने देंगे का प्रयत्न पूरा करना है।।
थाती जैसी है स्मृतियाँ कहता अपना संस्कार है।
देश प्रेम की परिपाटी को शीश झुकाकर नमस्कार है।।

तुम हो विश्वगुरु

– डॉ. अनुपमा गुप्ता

फिर से बुला रही है बच्चो !
भारत माँ यह भूमि महान।
इस मिट्टी की खातिर जीना,
विश्व करे जो इसका गान।।
हुए पचहत्तर वर्ष हमारी,
प्यारी–सी आजादी को।
फिर से जीवित करना हमको,
क्रांतिभाव और खादी को।।
डिजिटल वाले युग में इसको,
देनी है ऊँची उड़ान।।
तुममें कई कलाम छुपे हैं,
गार्गी और अपाला है।
सिंधु, सानिया, विश्वनाथ हैं,
संग उत्साह निराला है।।
ध्वज लहराना है भारत का,
दो सबसे उन्नत सम्मान।
हाथ थामकर आगे बढ़ना,
छूटे ना कोई वंचित।
साहस से पतवार थामना,
संस्कारों से तुम सिंचित।।
दुनिया देख रही है तुमको,
दे दो विश्व गुरु का ज्ञान।

– अनपरा (उ. प्र.)

मातृवन्दना

– डॉ. रवीन्द्र शुक्ल

हे मातृ भू! तव वंदना। हे भरत भू! पद वंदना।
कल कल वाहित जल उज्ज्वला! मलयज मरुत शीतल चला!
तरुवर सघन घन वन फला! हे भरत भू! शुचि श्यामला!
तव वंदना तव वंदना, हे भरत भू! पद वंदना।।
ये श्वेत पुलकित चांदनी। ये पुष्प तरु शोभा घनी।
ये सौख्यदा मृदुभाषिणी। ये हासदा वर दायिनी।
उस भरत भू की वंदना। हे मातृ भू! पद वंदना।।
शत कोटि कंठों शांत स्वर। विकराल चंडी रूप धर।
गरजे कभी हुंकार कर। लरजे कभी रिपु मार कर।
उस भरत भू की वंदना। हे मातृ भू! पद वंदना।।
द्विगुणित भुजा असिधारिणी। बल दुष्ट दल संहारिणी।
हे सर्व दुख भव तारिणी! सबला सबल मंदाकिनी!
अरिमर्दिनी माँ! वंदना। हे भरत भू! पद वंदना।।
तुम ज्ञान धर्म प्रकाश माँ! जग का हृदय आकाश माँ!
हो प्राण भी, तन के तुम्हीं। तुम कर्म पंथ विकास माँ!
हे भरत भू! पद वंदना। हे मातृभू! पद वंदना।।
हो तुम भुजा की शक्ति माँ! तुम ही हृदय की भक्ति माँ!
तुम मंदिरों की मूर्ति माँ! दुर्गा तुम्हीं शिवशक्ति माँ!
हे भरत भू! पद वंदना। हे मातृभू! पद वंदना।
दश भुजाएँ अस्त्र धारे। कमलदल कमला विहारे।
देवि विद्या दायिनी माँ! नमन अर्पित तव दुआरे।
हे भरत भू! पद वंदना। हे मातृभू! पद वंदना।।
अतुलितबला! निर्मलमना! तव वंदना पद वंदना।।
हे भरत भू! पद वंदना। हे मातृ भू! पद वंदना।

(यह वंदना गीत श्री. बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय रचित भारत के राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् का हिन्दी साहित्य भारती के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र शुक्ल द्वारा किया गया भावानुवाद है।)

– झाँसी (म. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०२/२०२२ | प्रेषण तिथि २८/०२/२०२२ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

पन्द्रहवर्षीय
1400/-

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब ***Jio Net*** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना